अमर बाबा

कमला धारक रक्षक — शिवरा गामक अमरसिंहक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम

मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : धार आ धरम

मिथिलाक धार सभ खाली पानि नहि थिक — ओ माए थिक, देवी थिक, आ कखनो काल... कथा थिक। कमला धार एहने एकटा कथा थिक, जकर लहरि-लहरिमे एकटा नाम आइयो धोखराइत अछि — अमर बाबा।

ई गाथा रक्षाक थिक — मुदा रक्षाक अपन मूल्य होइत छै। ई गाथा वीरताक थिक — मुदा वीरताक तरुआरिपर कखनो काल नोरो टघरैत अछि। तेँ ई गाथा जतेक वीर-रसक, ततबे करुण।

अध्याय १ : कमला धारक जन्म

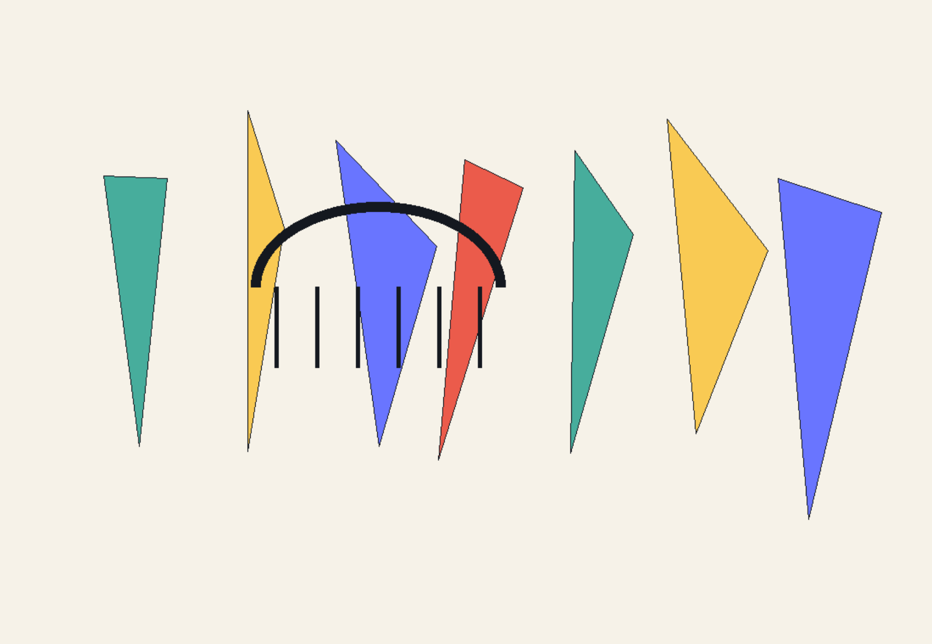

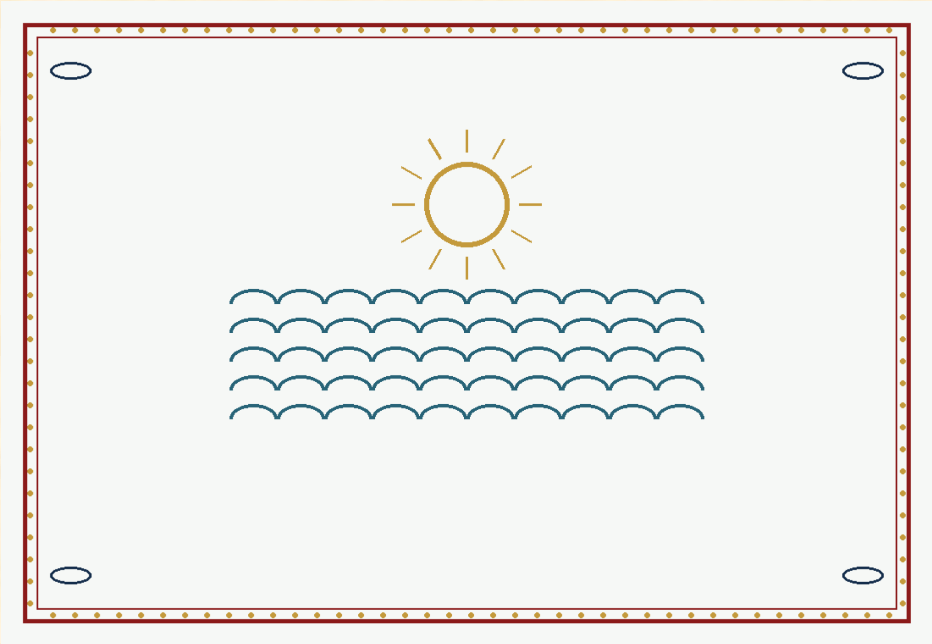

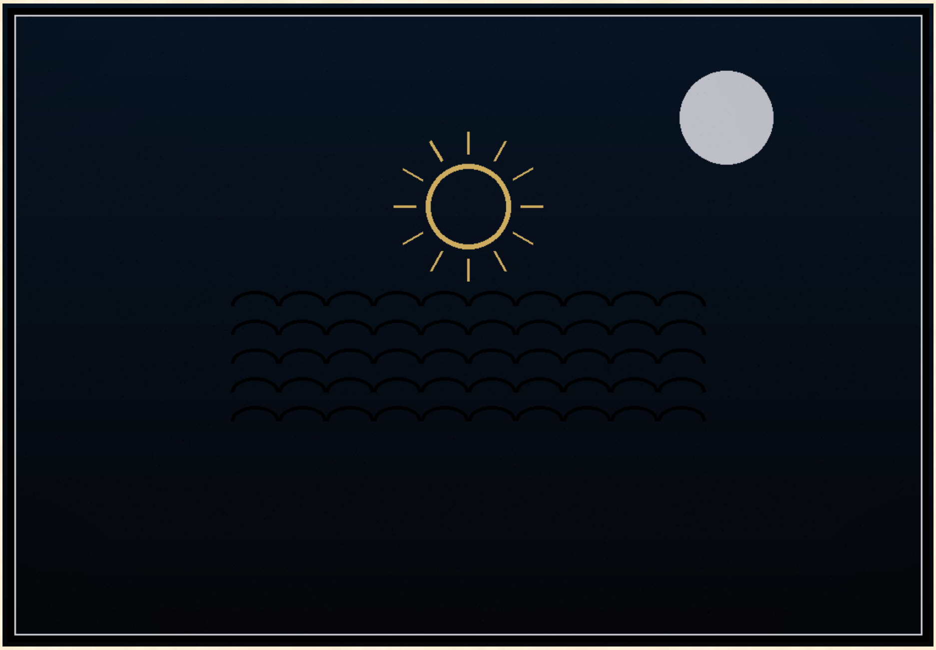

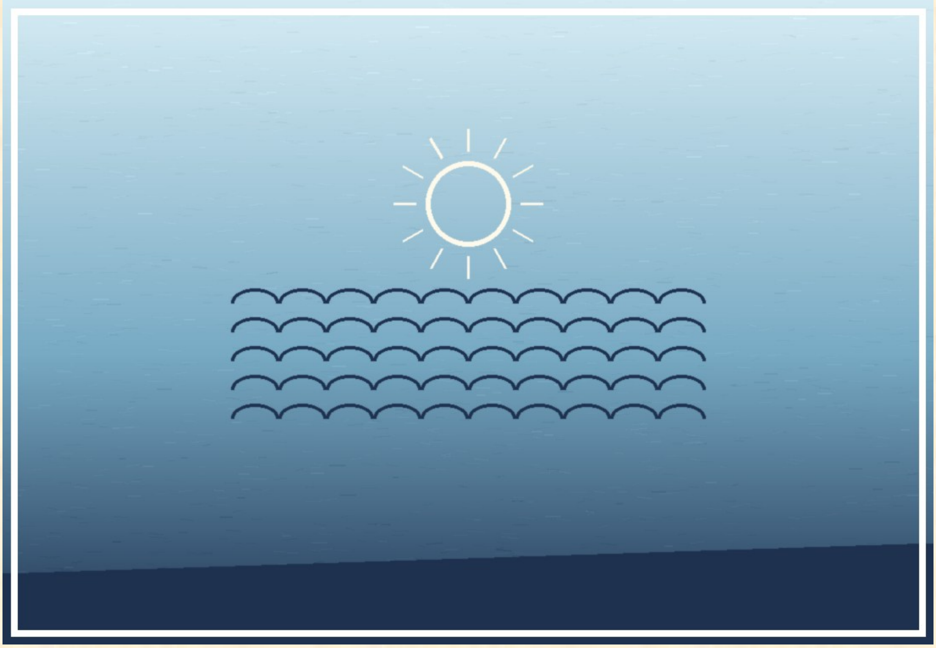

चित्र 1

ओहि बरख मिथिलाक धरती फाटल छल — बरखा रूसल, खेत चरचराएल, इनार सुखाएल। आ तखन, जेना धरतीक पुकार सुनि, कमला धारक जन्म भेलन्हि। पहाड़सँ उतरलि, माटि चीरि मैदानमे पसरि गेलीह — चम्-चम् करैत नव धार।

जतय-जतय कमला बहलीह, ओतय-ओतय जीवन जागि उठल। सूखल खेत हरिया गेल, इनारमे पानि घुरि आएल, आ गामक घाट पर फेर बच्चा सभक हल्ला शुरू भेल।

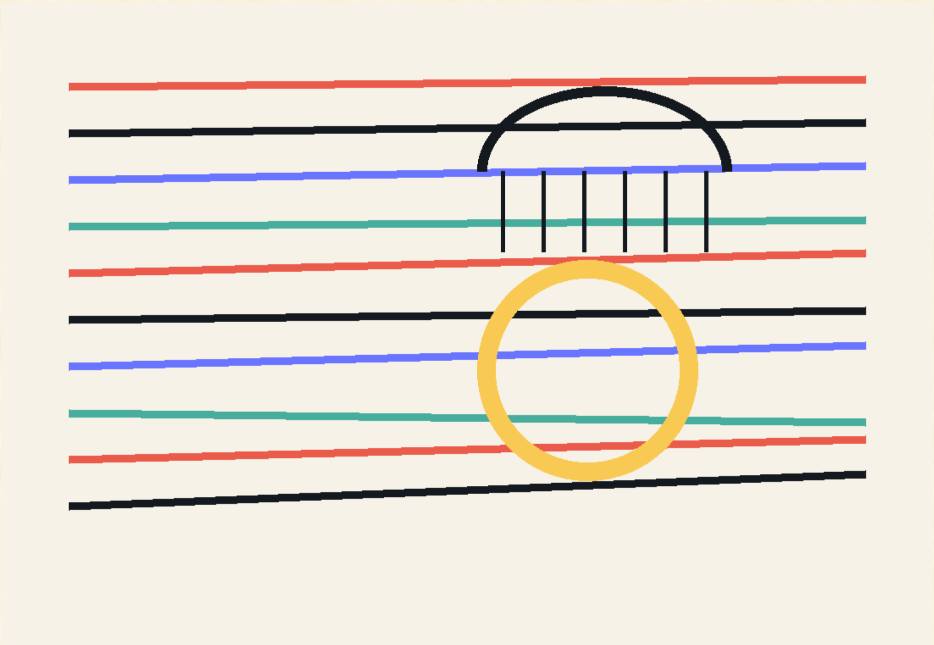

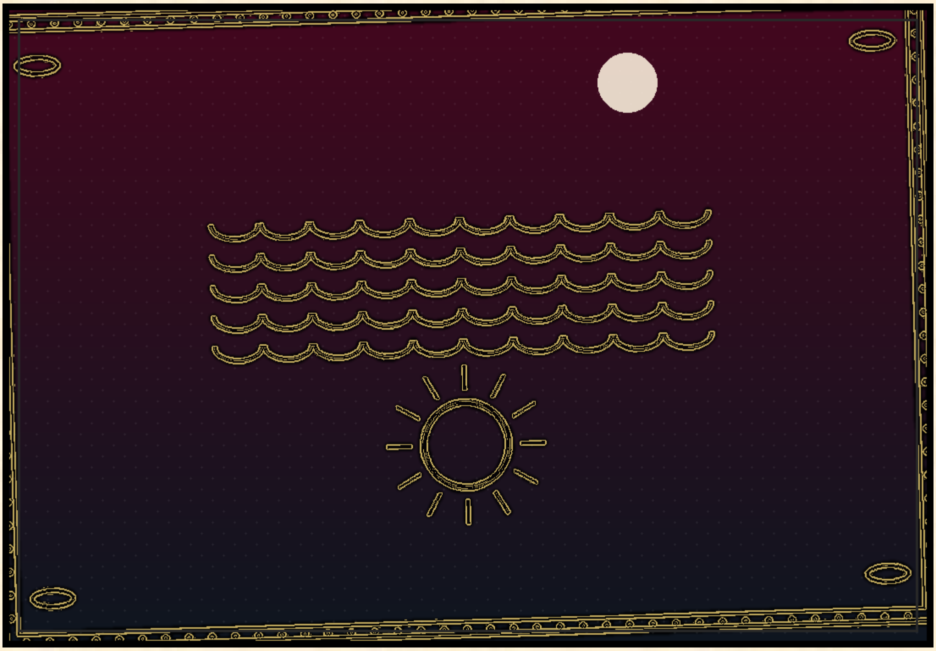
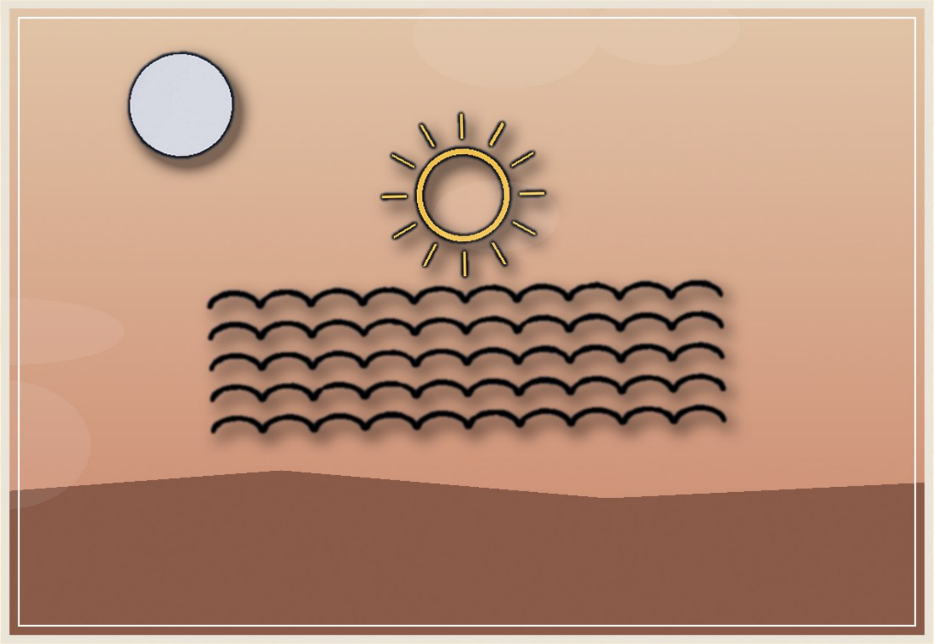

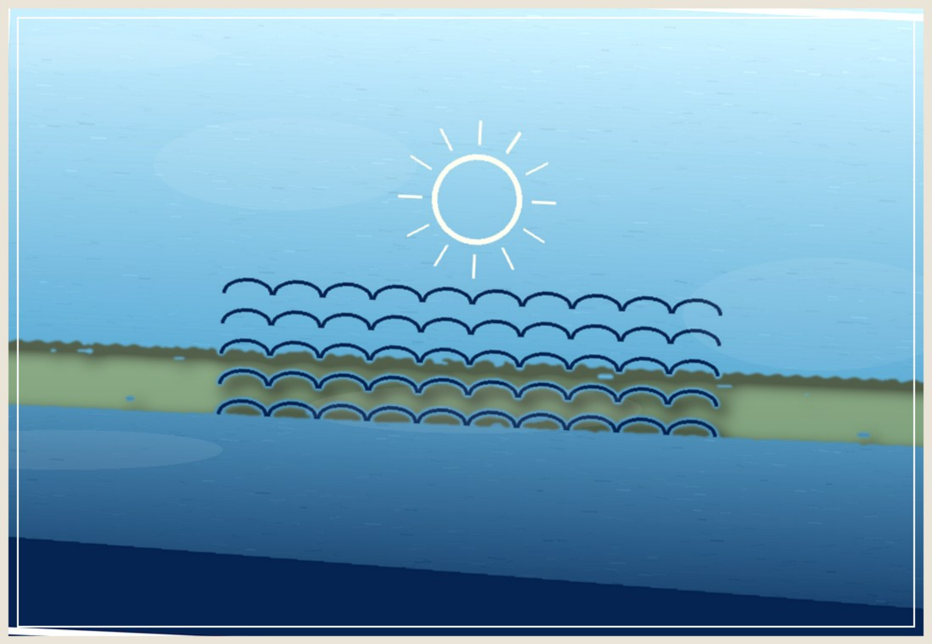

चित्र 2

बूढ़-पुरान कहलनि — 'ई साधारण धार नहि, देवी थिकीह। एहि पानिमे माएक आँचरक शीतलता छै।' आ ओहि दिनसँ लोक कमलाकेँ 'कमला माए' कहए लागल।

धारक दुनू कात गाम बसैत गेल — किसानक गाम, मलाहक गाम। सभक जीवनक धुरी एक्कहि — कमला। जे धार दैत छलि, से सभ लैत छल; आ बदलामे दैत छल श्रद्धा। ई सन्तुलन बरखो चलल — जाधरि एकटा आँखिमे खोट नहि आएल।

अध्याय २ : किसान आ मलाह

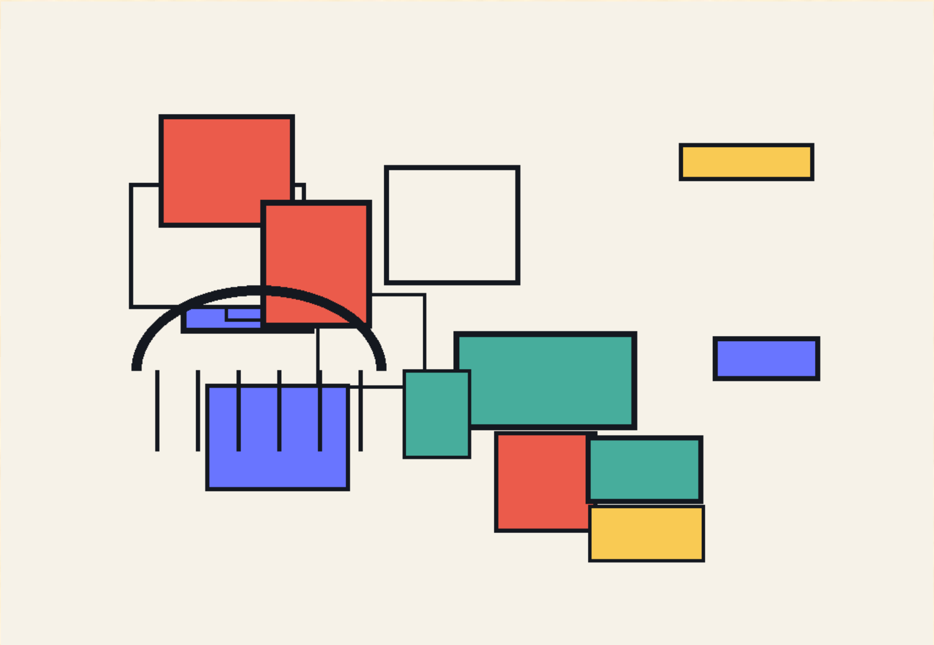

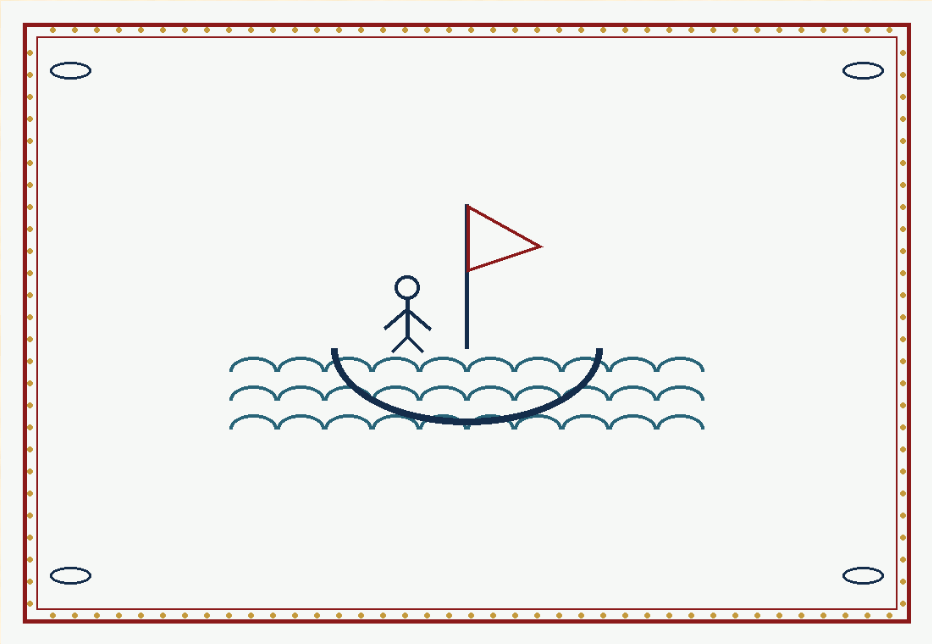

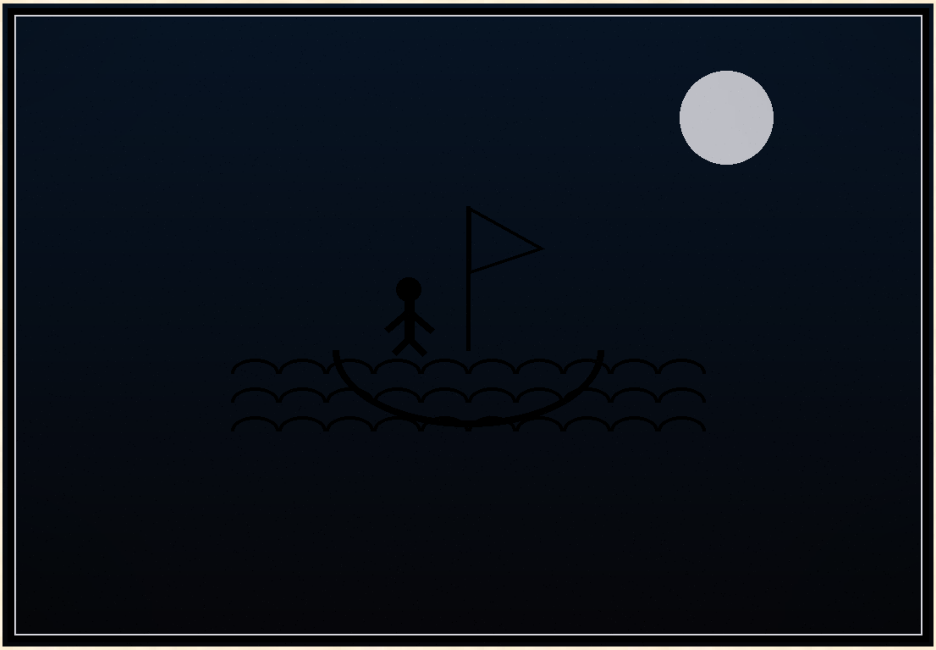

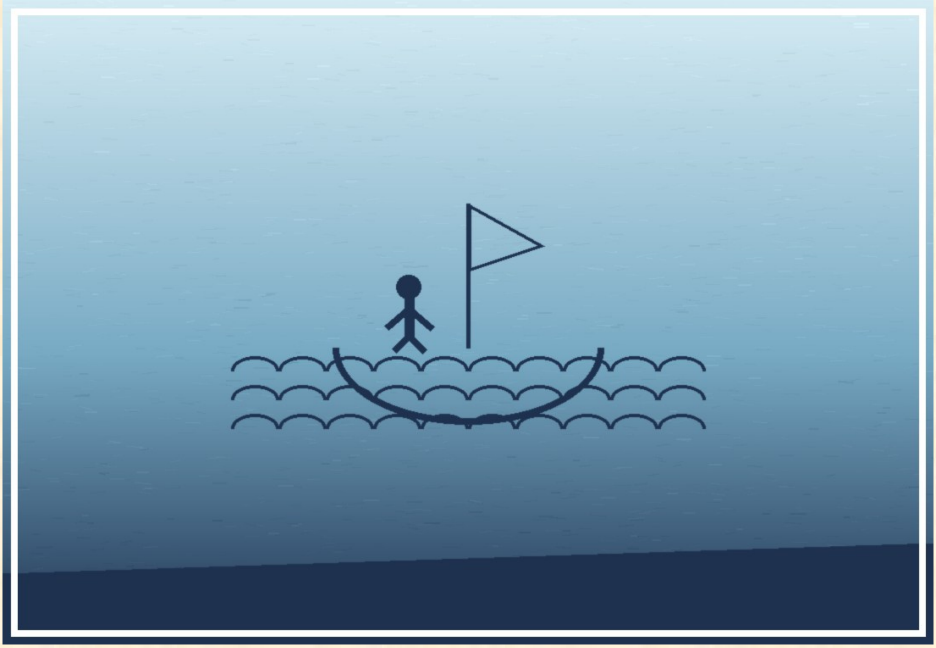

चित्र 3

किसान आ मलाह — कमलाक दू बेटा। भोरे किसान हर लऽ कऽ खेत दिस, मलाह जाल लऽ कऽ घाट दिस। साँझखन दुनूक घर कमलेक देल अन्न आ माछसँ महकैत छल।

मलाह टोलीक त' पूरा संसारे कमला छलीह। नाव हुनक महफा, जाल हुनक भाग्य, आ धारक लहरि हुनक लोरि। मलाहक बच्चा पानिमे ओहिना खेलाइत छल जेना आन बच्चा आँगनमे।

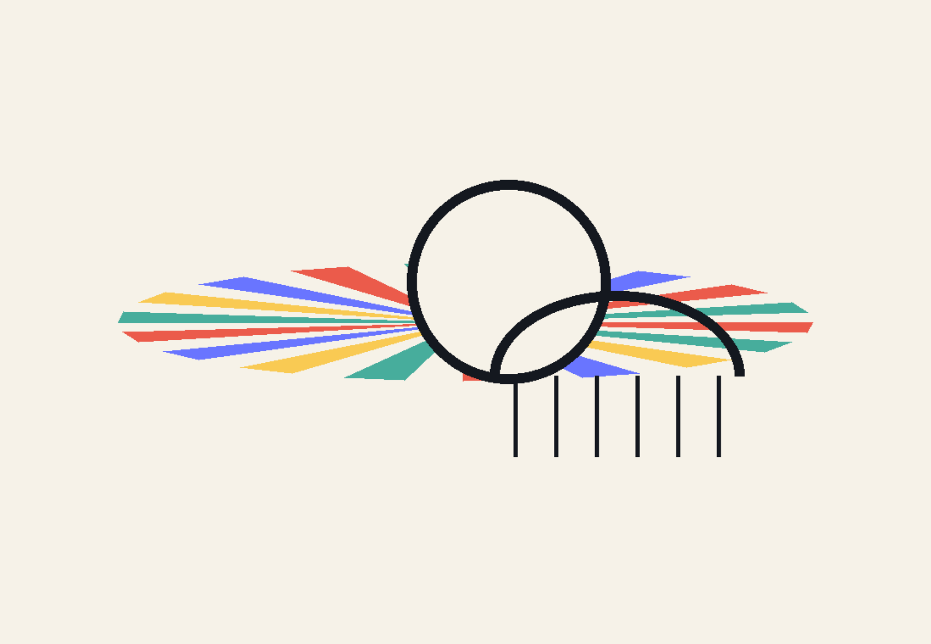

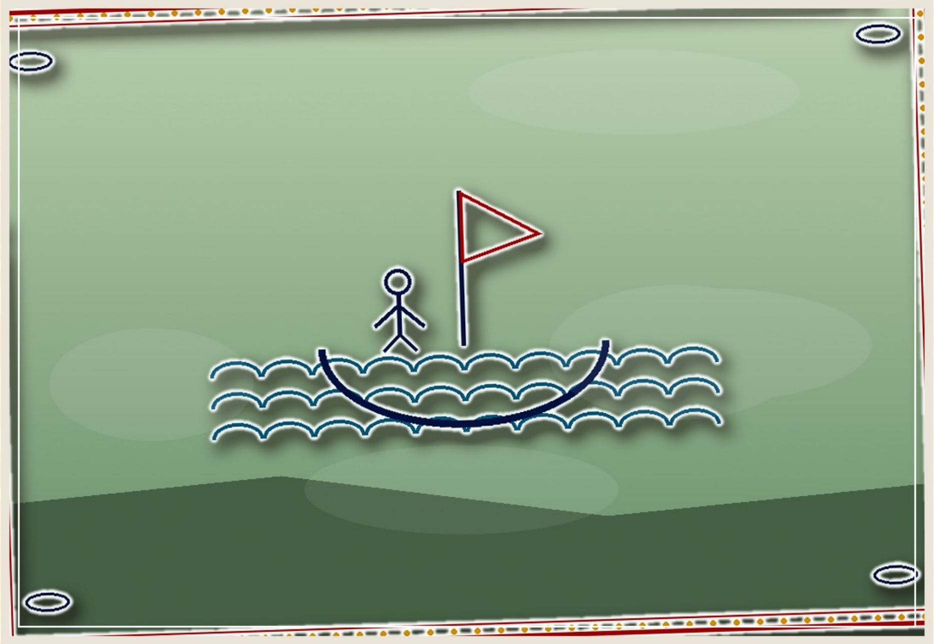

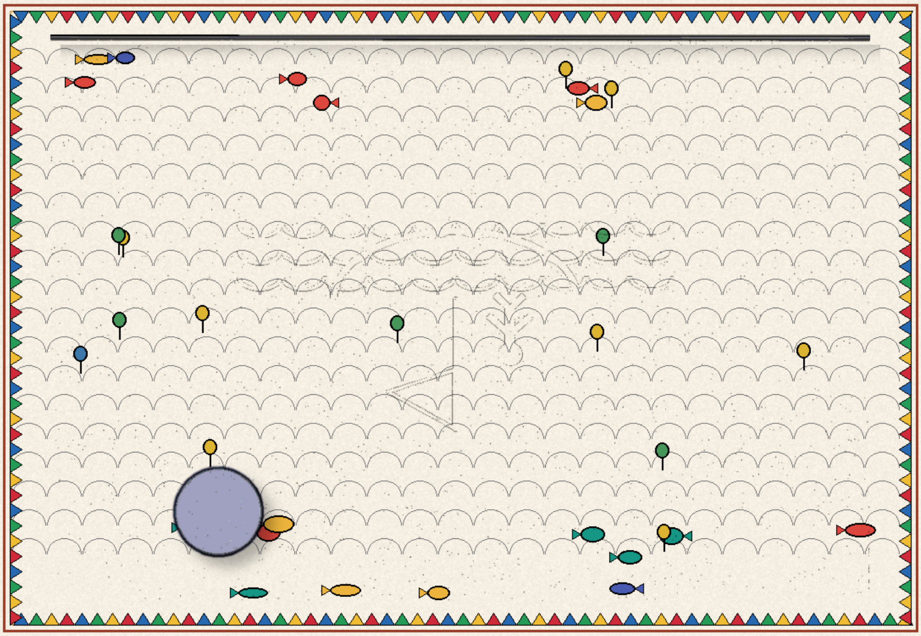

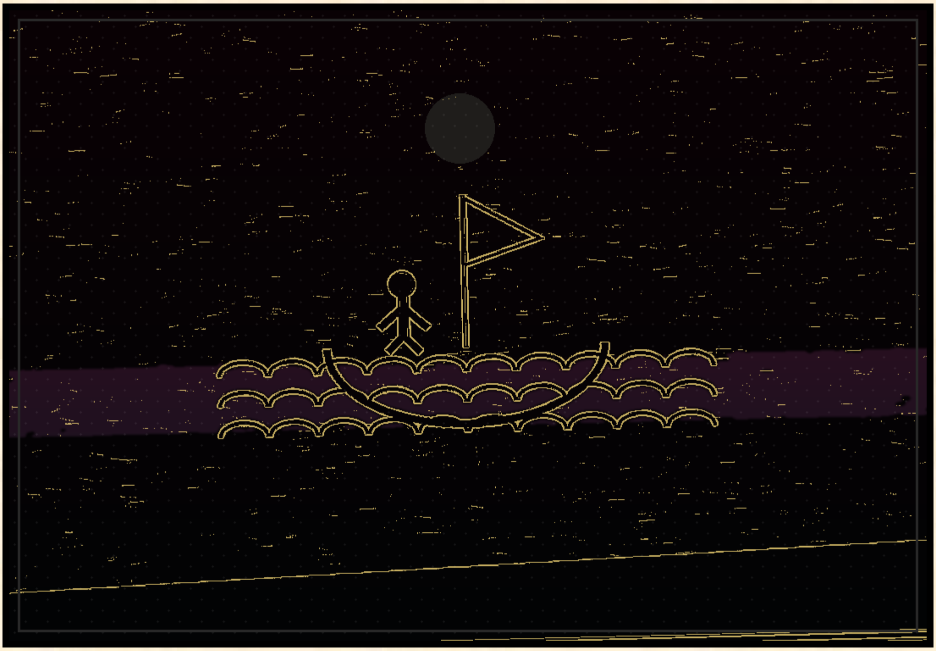

चित्र 4

पावनि-तिहारमे घाटपर दीप जरैत छल। नव विवाहिता कमलाकेँ सेनुर चढ़बैत छलीह, माए सभ बच्चाक मुण्डनक केश धारकेँ सौंपैत छलीह। कमला सभक साक्षी छलीह — जन्मसँ मरण धरिक।

आनन्दित छल सभक जीवन। मुदा खिस्साक नियम छै — जतय आनन्दक वर्णन जतेक नमहर, बुझू आफद ओतबे लग। आ आफद एहि बेर पानिसँ नहि, मनुक्खक मोनसँ आबए बला छल।

अध्याय ३ : कमला पैघ भेलीह

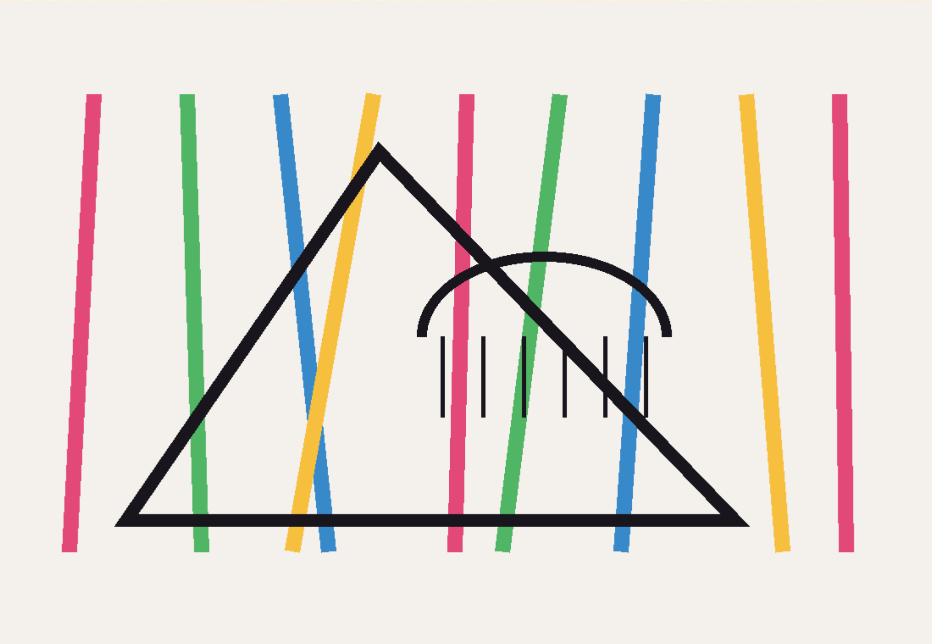

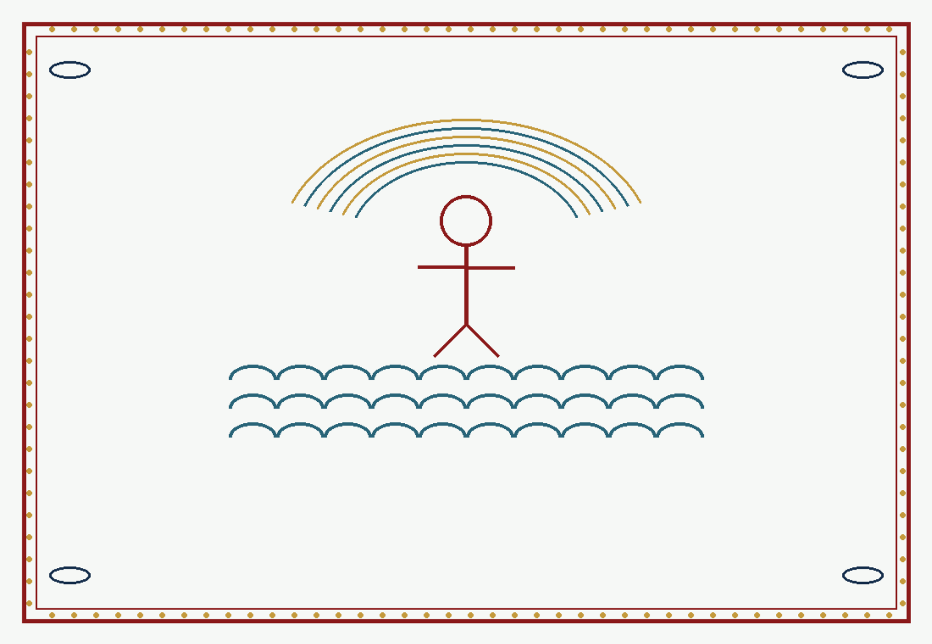

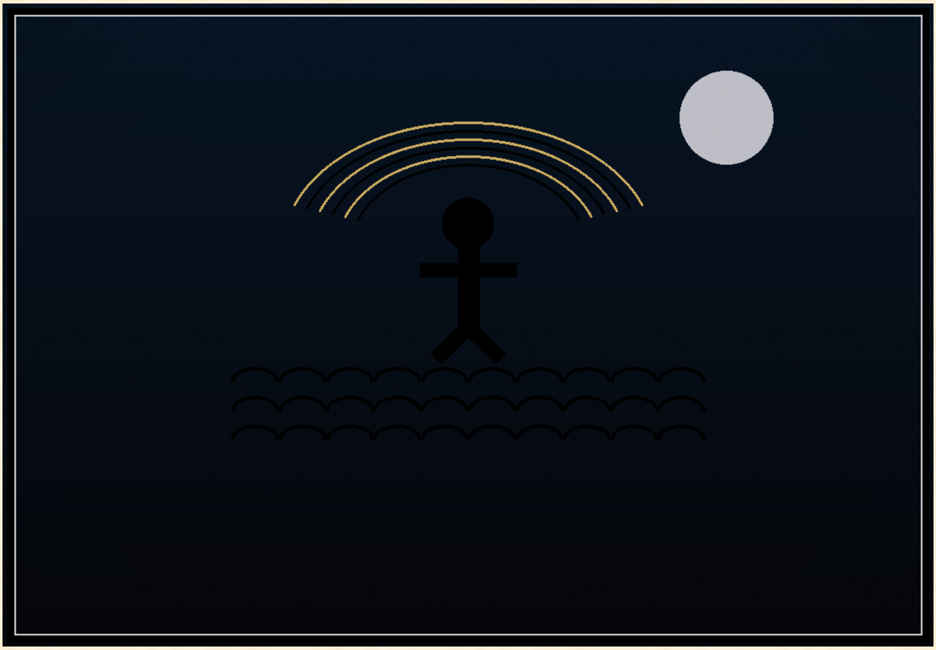

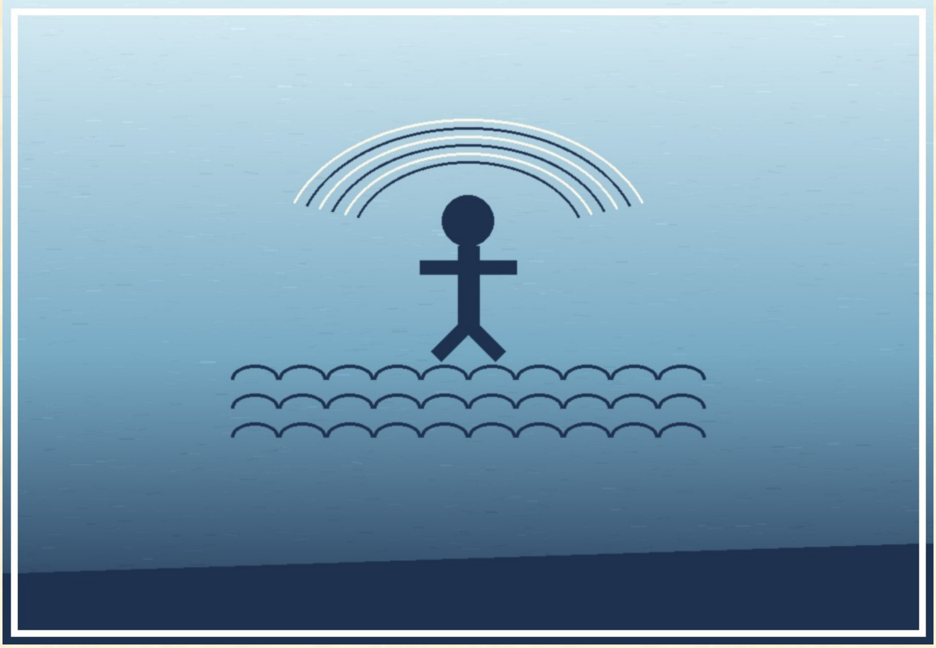

चित्र 5

समय बीतल। कमला पैघ भेलीह — धारक पाट चाकर भेल, लहरिमे जुआनीक जोश आएल, आ ओकर रूपक चर्च दूर-दूर धरि पसरल। भोरका सूर्यमे कमलाक पानि सोना जकाँ, साँझमे सेनुर जकाँ, आ चानि-रातिमे चानी जकाँ चमकैत छल।

लोक कहए — 'कमला सन सुन्नरि धार तीनू लोकमे नहि।' आ जेना कोनो कन्याक यशसँ माता-पिताक छाती चाकर होइत अछि, तहिना कमलाक यशसँ किसान-मलाहक माथ ऊँच होइत छल।

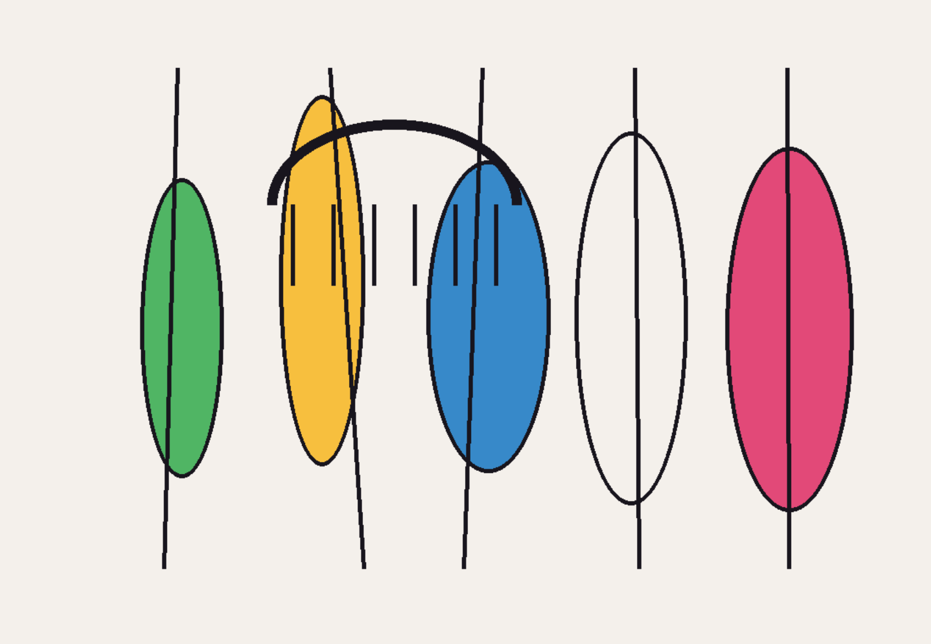

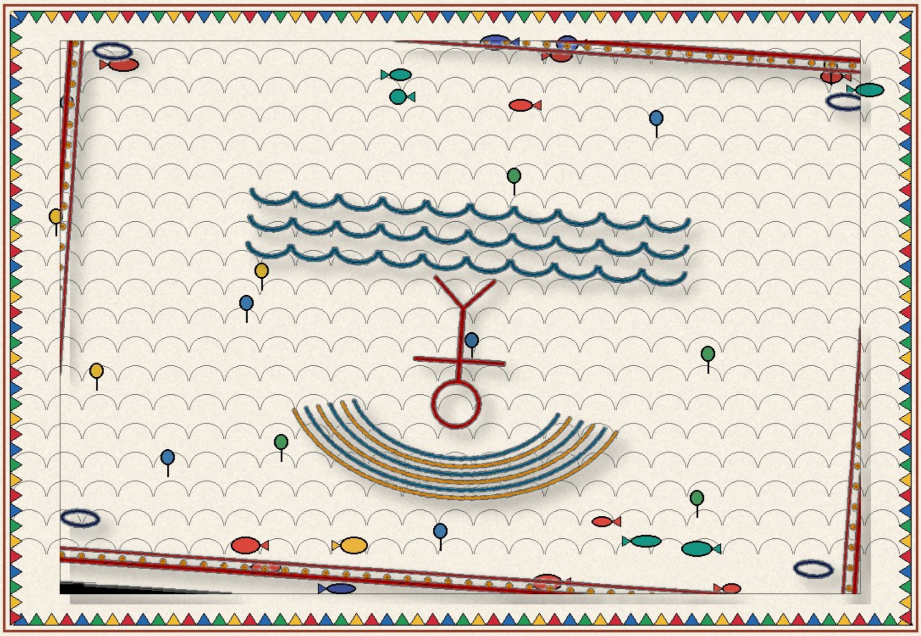

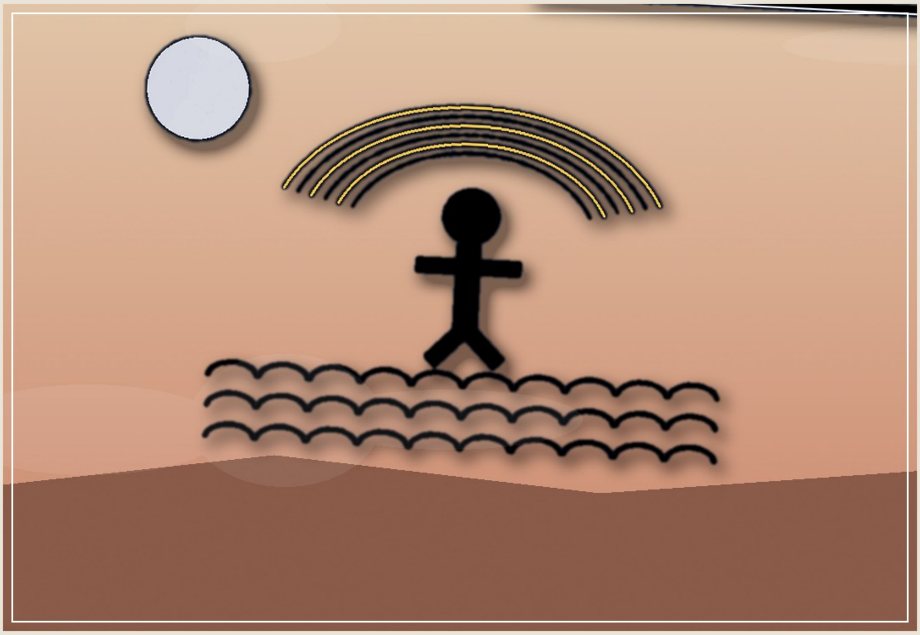

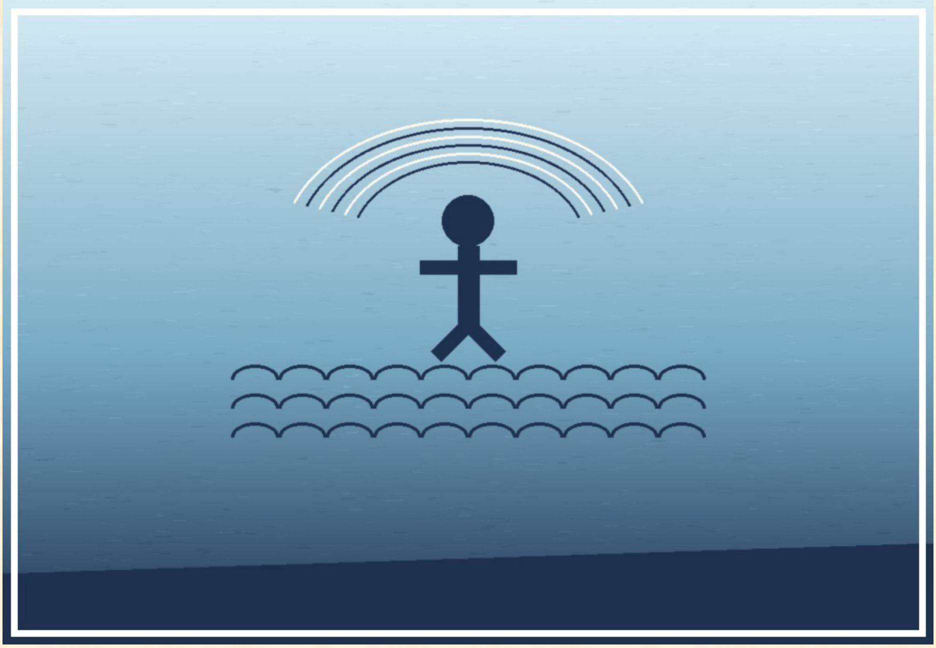

चित्र 6

मुदा यश आ रूप — ई दुनू दीप थिक, आ दीप पर खाली फतिंगे नहि, साँपो अबैत अछि।

धारक कातक एकटा टोलक सरदार छल बैदला — देहक पहलमान, मोनक कारी। ओकर आँखि जहिया कमलाक जुआन धारपर पड़ल, तहिया ओहि आँखिमे श्रद्धा नहि जागल — खोट जागल।

अध्याय ४ : बैदलाक खोट

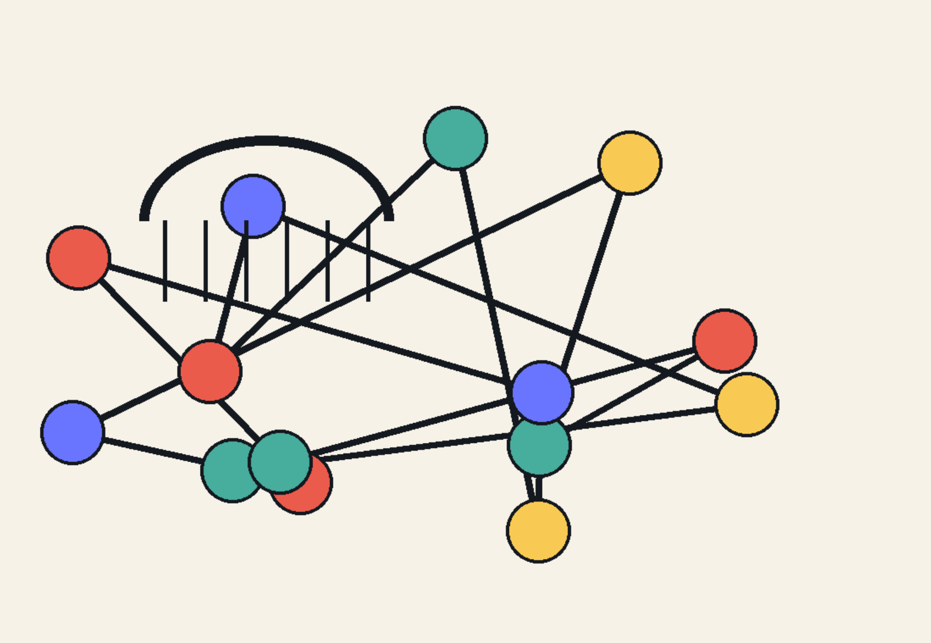

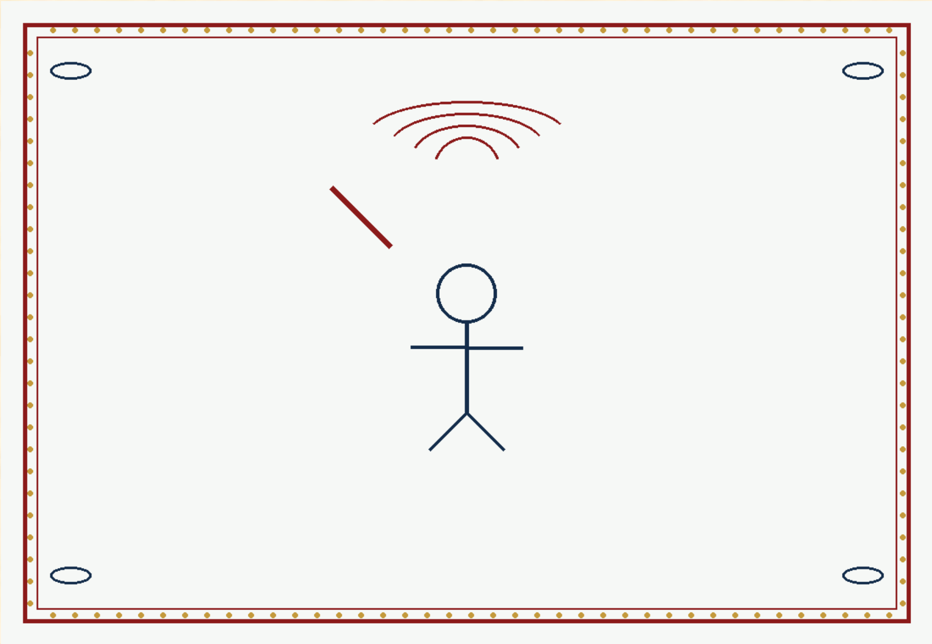

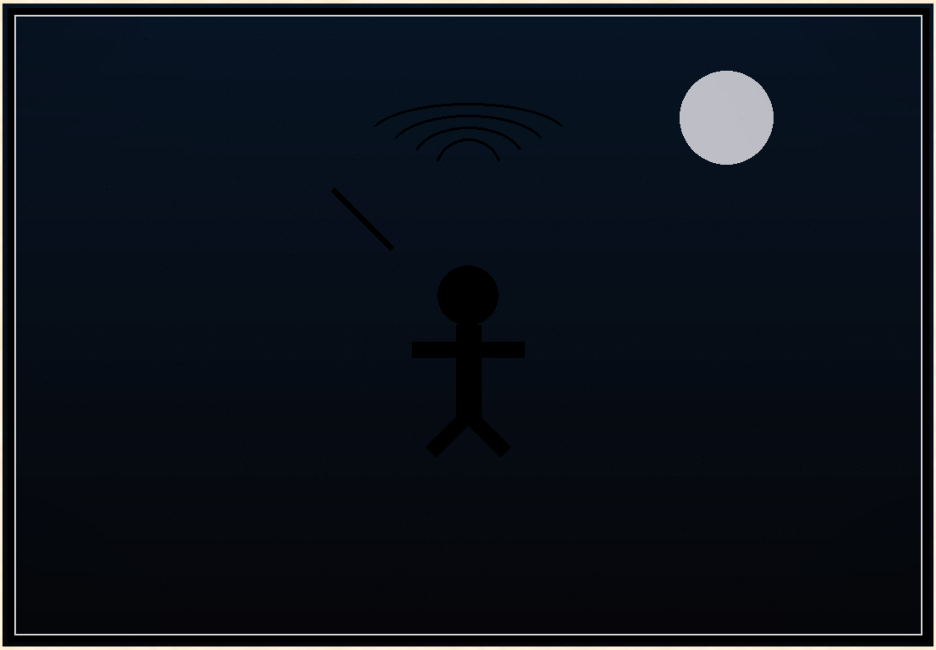

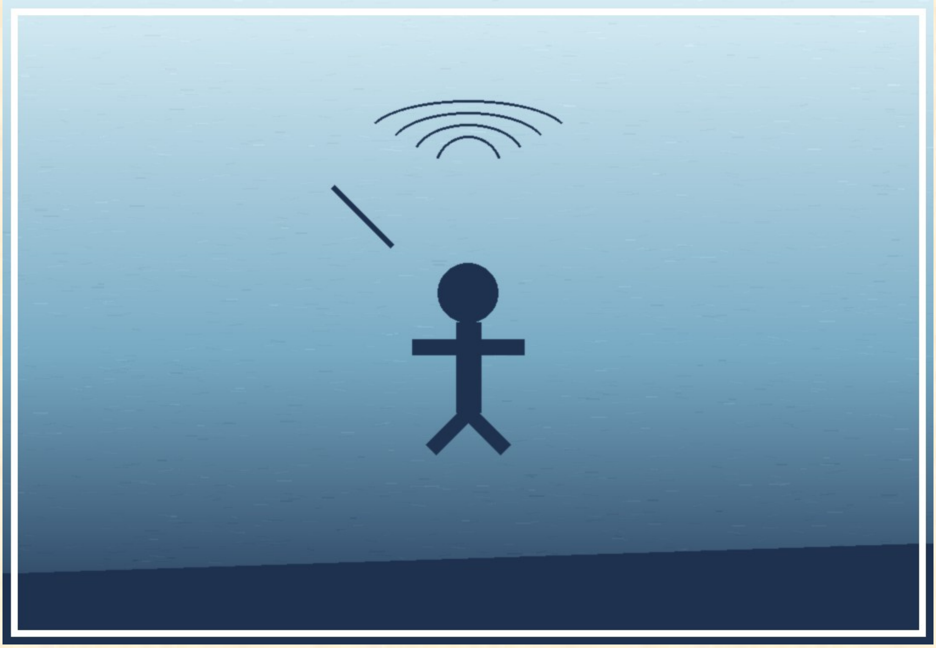

चित्र 7

बैदला बदमाश छल — गामक लोक ओकर नामसँ थरथराइ छल। जे वस्तु नीक लागए, से छीनि लेब — यएह ओकर धरम छल। आ आब ओकरा सभसँ नीक लागलि छलीह — कमला।

ओ घोषणा कऽ देलक: 'हम कमलासँ बियाह करब — बलजोड़ी!' बलजोड़ी — माने जबरदस्ती, माने कमलाक इच्छाक कोनो मोल नहि। देवी-धारसँ बलजोड़ी बियाह! सुनि कऽ गामक गाम सन्न रहि गेल।

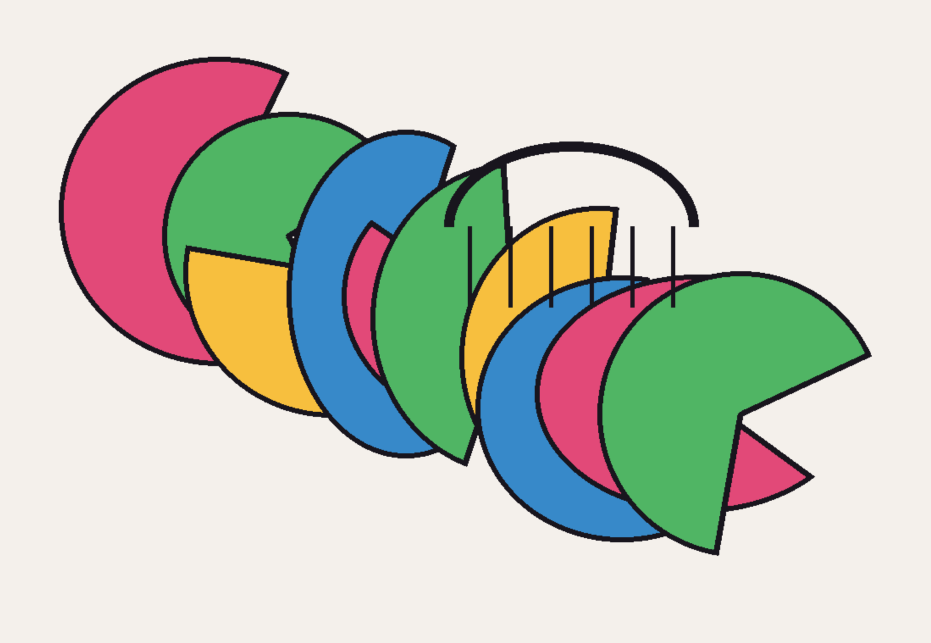

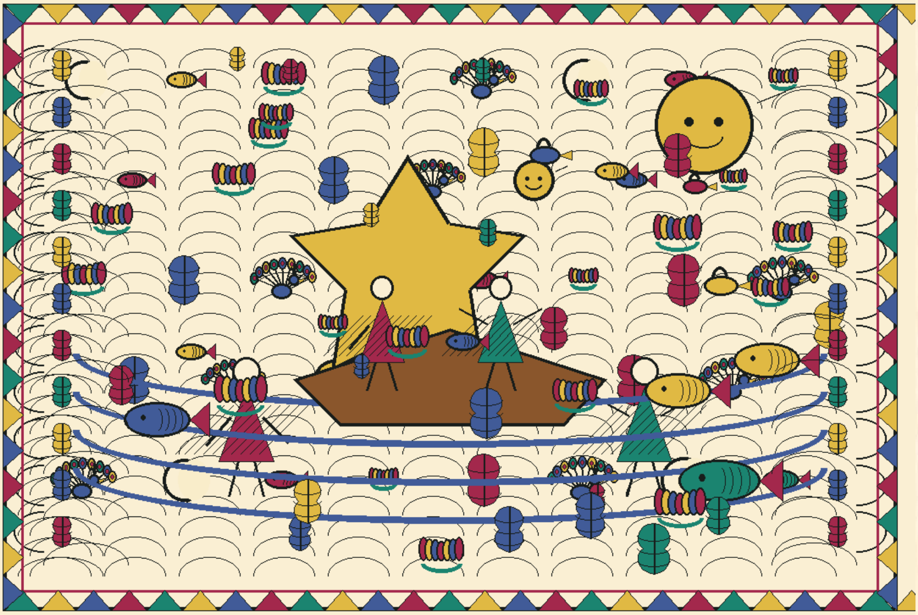

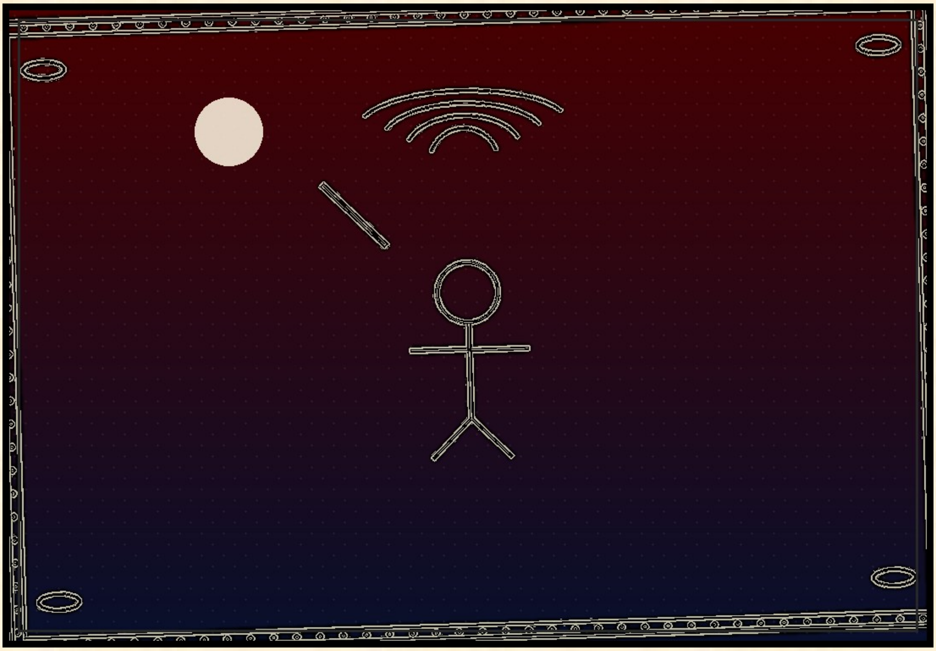

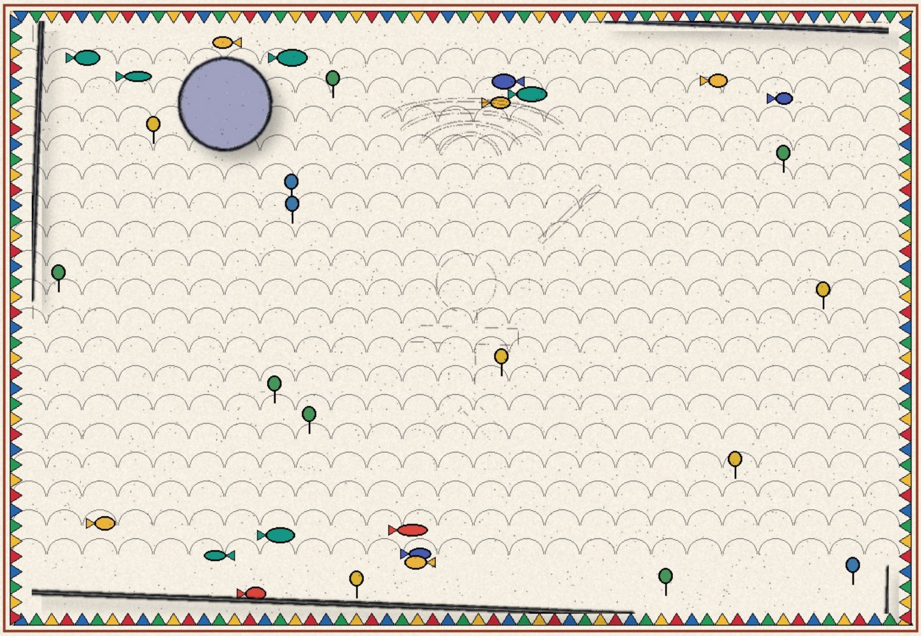

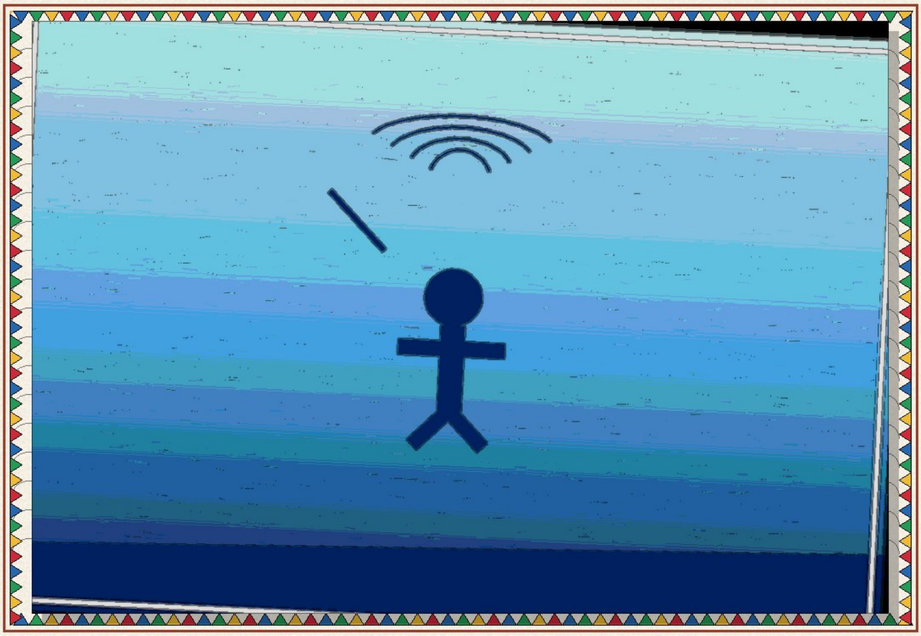

चित्र 8

ओ घाट पर अखराहा जुमा देलक, अपन लठैत बैसा देलक, आ डंका पीटि देलक — 'जे रोकत, से पहिने हमरासँ लड़त!' कमलाक घाट, जतय दीप जरैत छल, ओतय आब लाठी चमकए लागल।

कमलाक लहरि ओहि दिनसँ बेचैन भऽ गेल। धार उमड़ए-घुमड़ए लागलि, जेना कहैत हो — 'हमर सन्तान सभ, सुनै छह? हमर लाज आब तोरे सभक हाथ।' आ सभसँ पहिने ई पुकार सुनलक मलाह टोली — कारण बेटीक लाज सभसँ पहिने ओकरे कान धरि पहुँचैत छै जे ओकरा कोरामे खेलओने हो।

अध्याय ५ : भोला बाबाक तपस्या

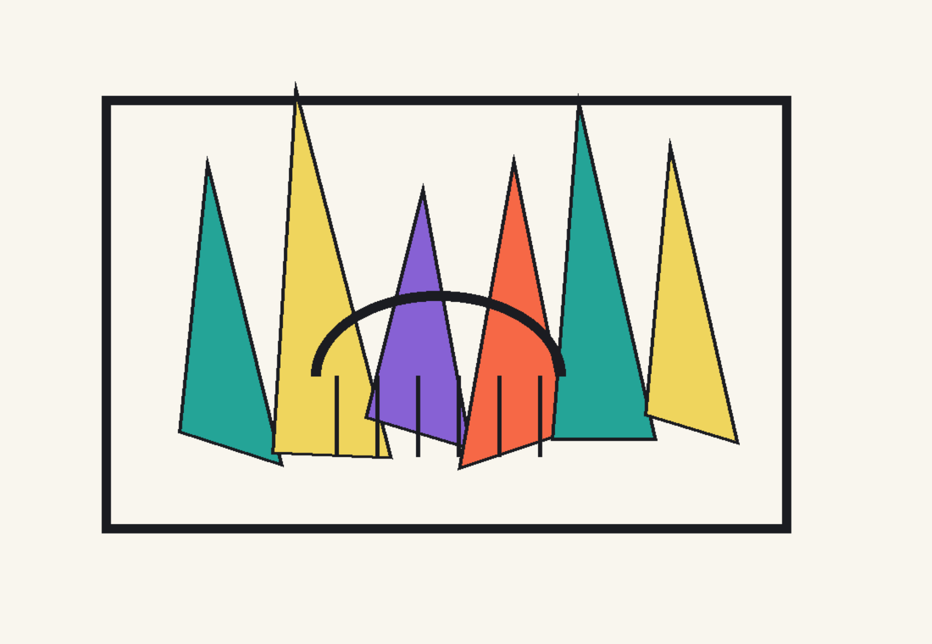

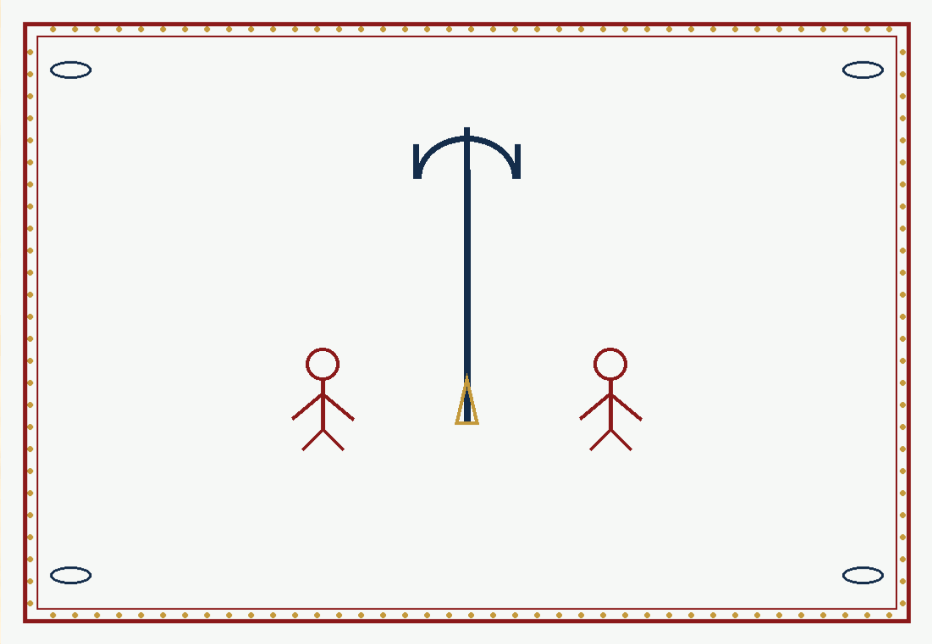

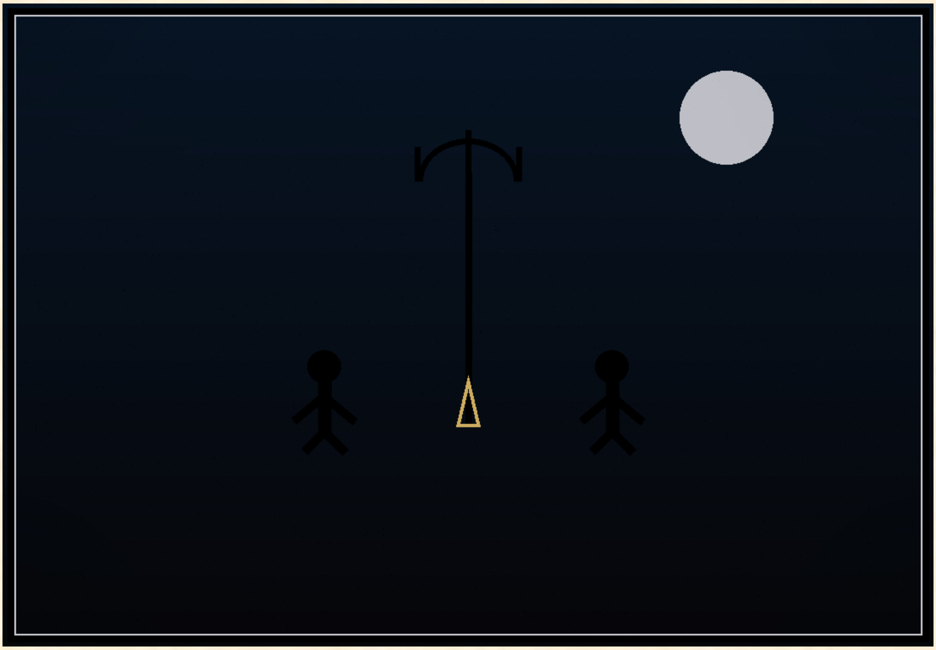

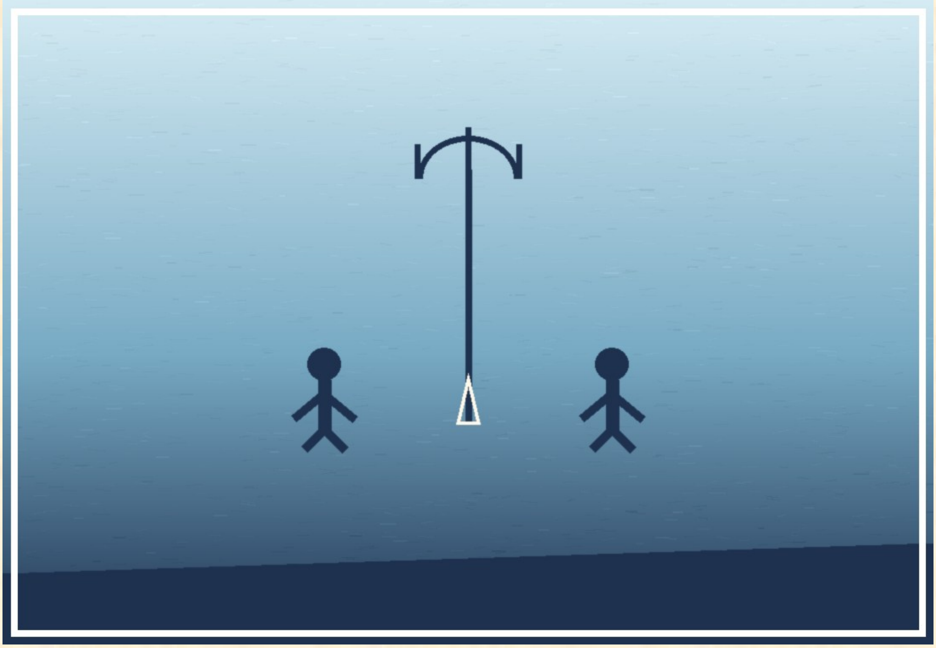

चित्र 9

मलाह लोकनि जुटलाह। मुदा करथि की? बैदलाक देहमे दैत्यक बल, संगमे लठैतक फौज — आ मलाह लग खाली जाल आ नाओ खेबाक लग्गा- डाँड़। बाँहिक लड़ाइमे हारि निश्चित छल। तखन बूढ़ मलाह कहलनि — 'जतय बाँहि हारि जाए, ओतय आराधना आगाँ बढ़ैत अछि। चलू भोला बाबा लग।'

आ शुरू भेल तपस्या। मलाह टोली अन्न-पानि बिसरि महादेवक शरणमे बैसि गेल। घाटपर बेलपत्रक ढेरी लागल, शिवालाक घण्टी राति-राति भरि बाजल, आ सभक जीहपर एक्कहि पुकार —

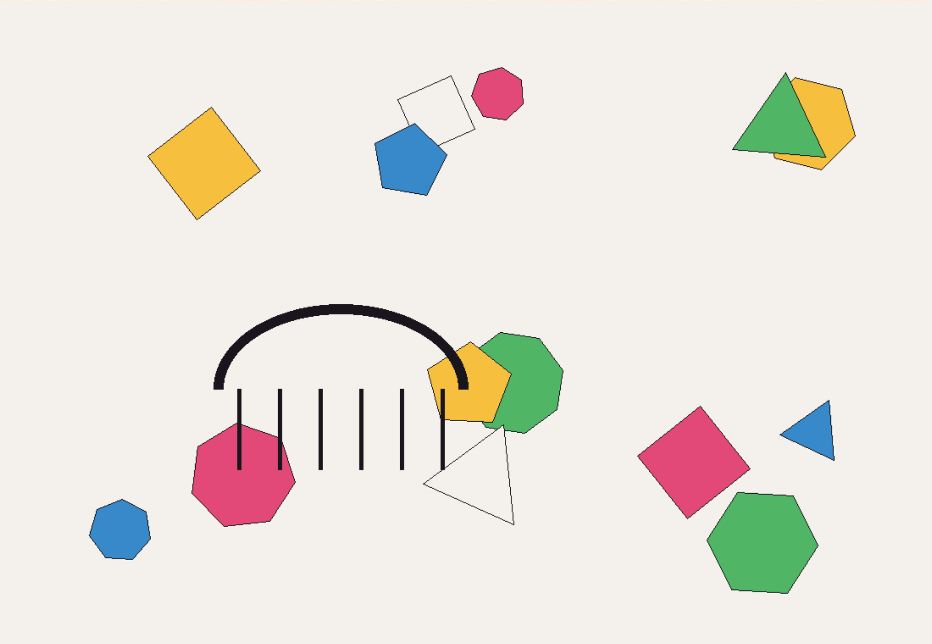

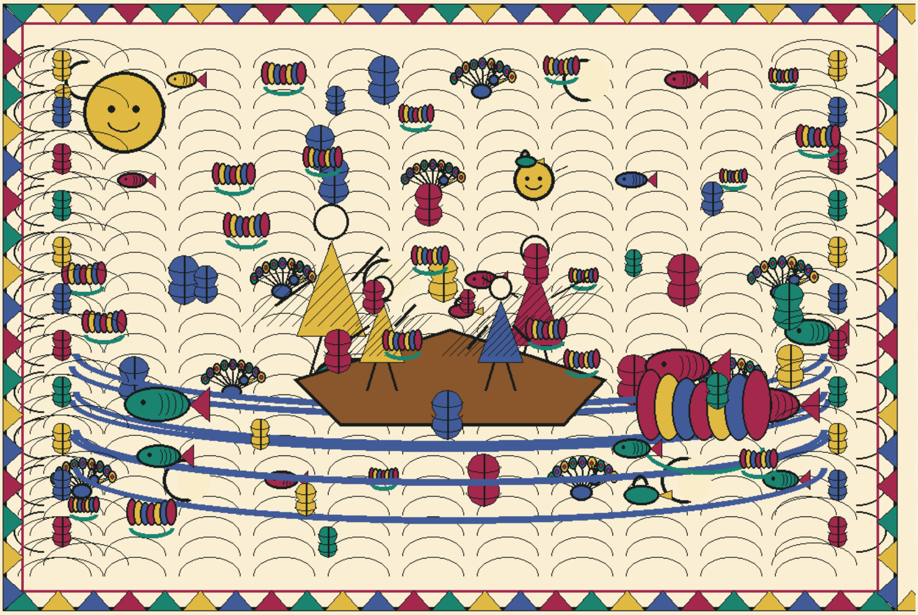

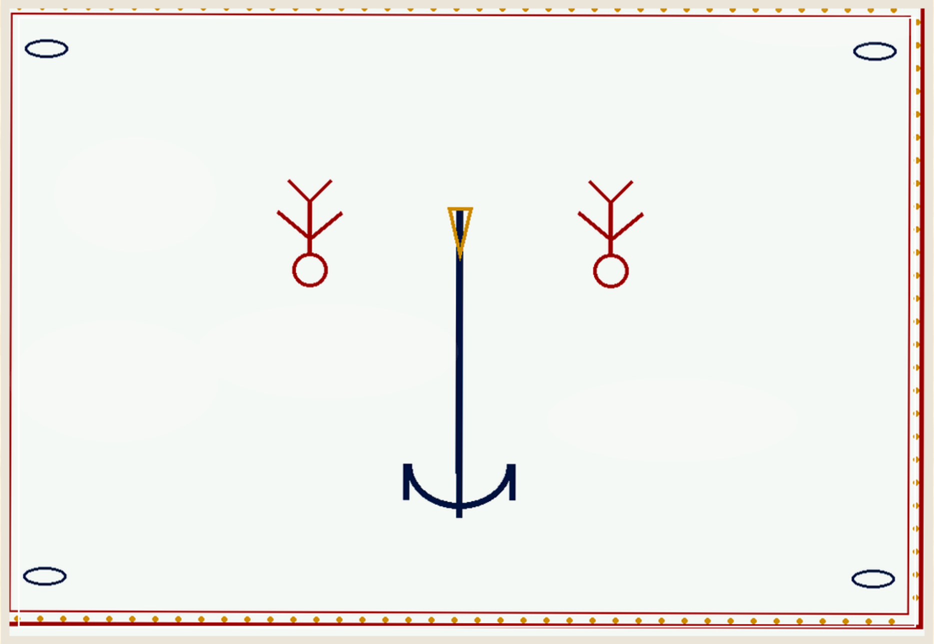

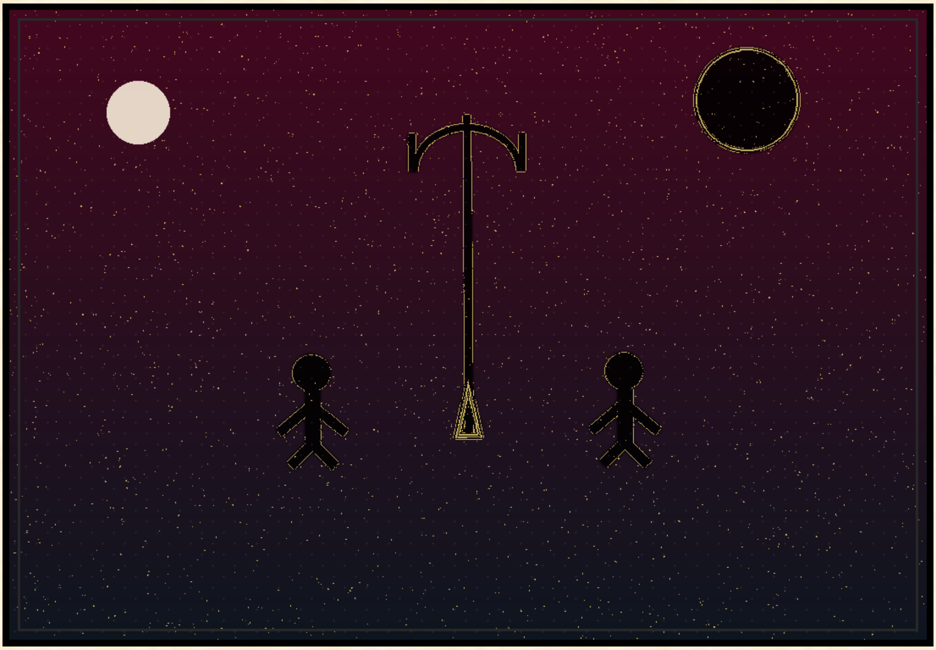

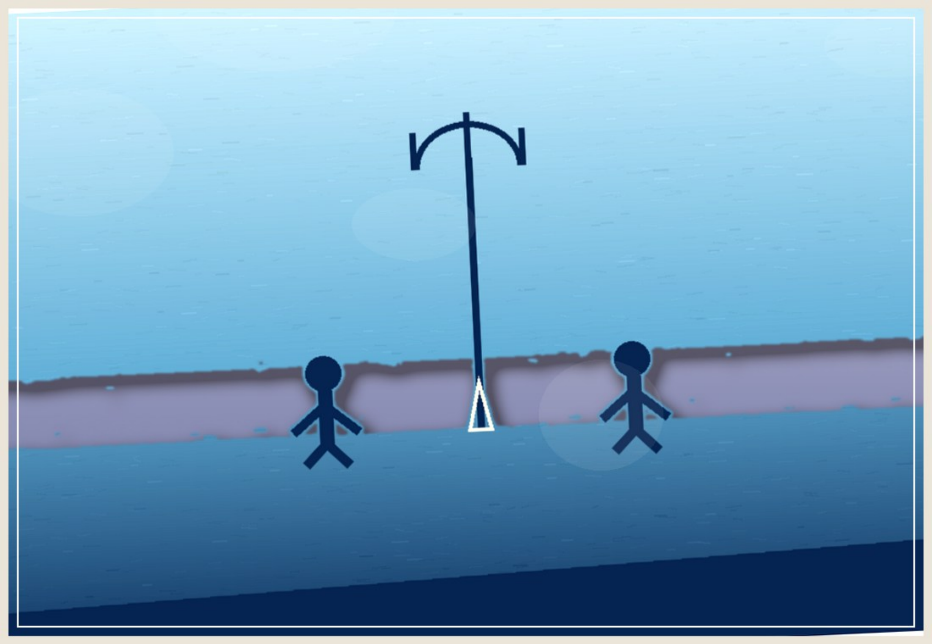

चित्र 10

'कमलाक सतीत्व बचाउ, महादेव!'

भोला बाबा — जे भोला छथि, से भक्तक नोर बेसी दिन नहि देखि सकैत छथि। तेसर राति तपस्वी सभकेँ लगलनि जे शिवालाक त्रिशूल अपने डोलल। आ भोला बाबा उपाय केलनि — मुदा देवताक उपाय वरदानक फूल जकाँ नहि खसैत अछि; ओ बीआ जकाँ खसैत अछि, जकरा जनमबामे समय लगैत छै।

अध्याय ६ : शिवरा गामक बालक

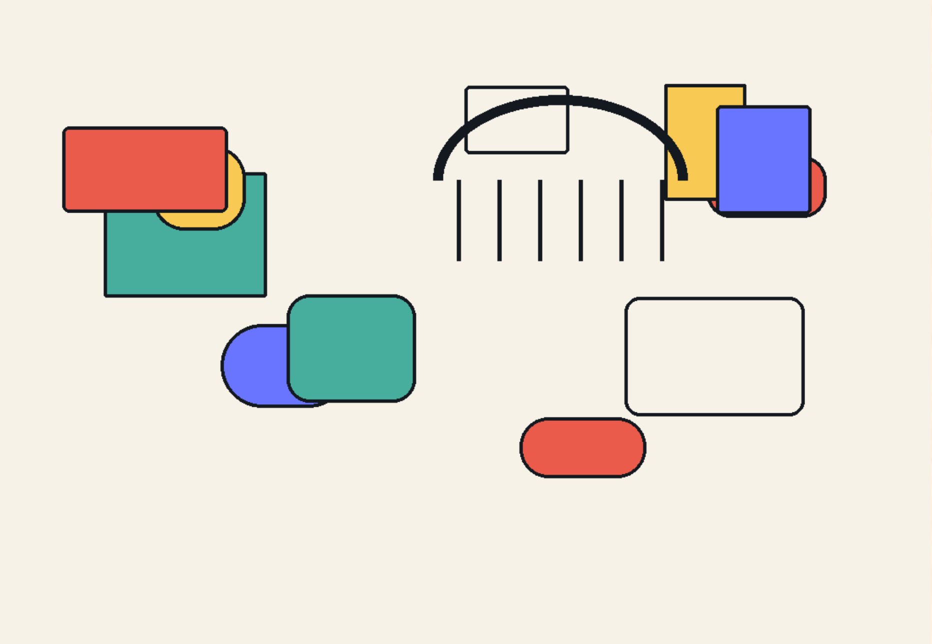

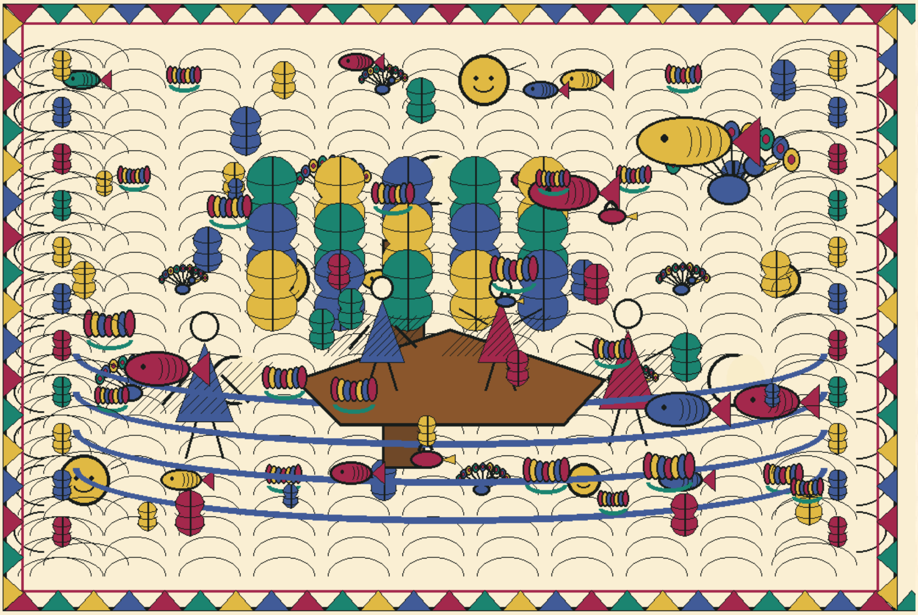

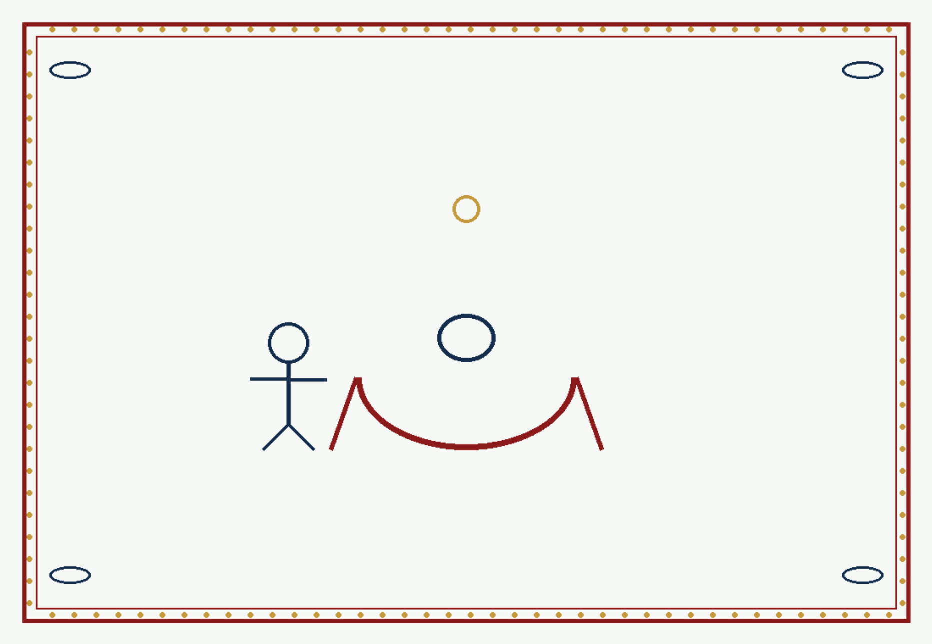

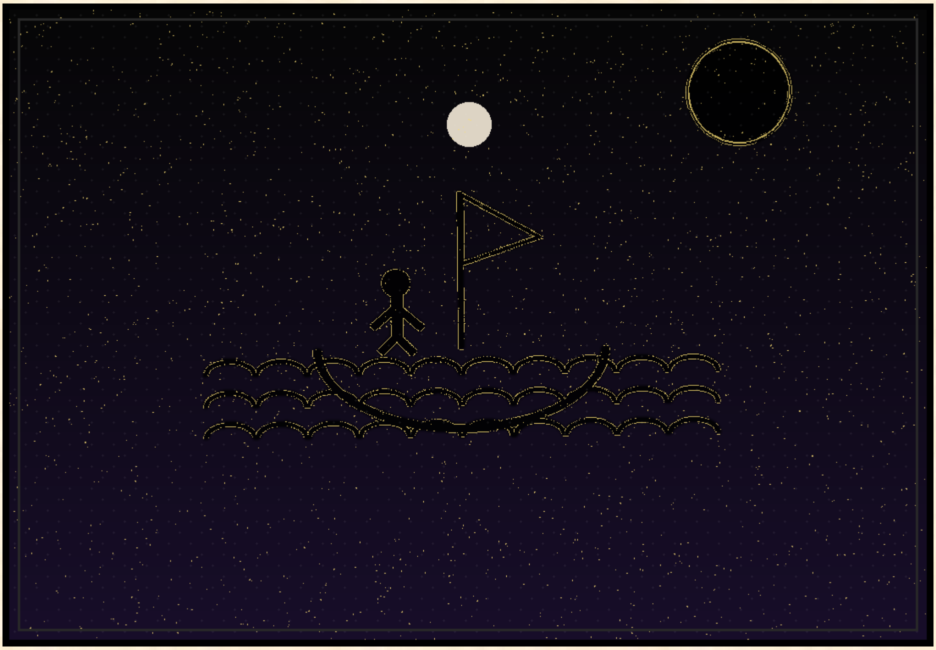

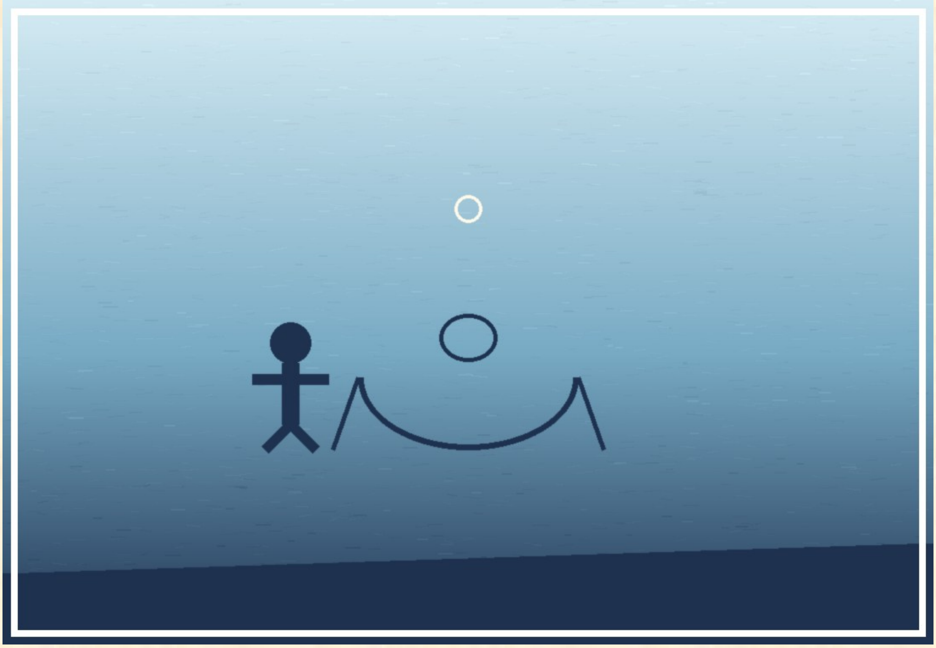

चित्र 11

शिवरा गाम — कमला कातक एकटा छोट मलाह-बस्ती। ओतुक्का एकटा मलाह परिवारमे ओहि बरख बेटा जनमल। नाम राखल गेल — अमरसिंह।

जन्महिसँ बालक असाधारण छल। जकर कोरामे जाए, ओकर बाँहि थाकि जाए — एतेक गदगर देह! छह मासमे बैसल, बरख पूरैत-पूरैत घाटक बालुपर दौड़ए लागल। आ आश्चर्य — पानिसँ ओकरा एहन प्रेम, जेना माछक बच्चा हो।

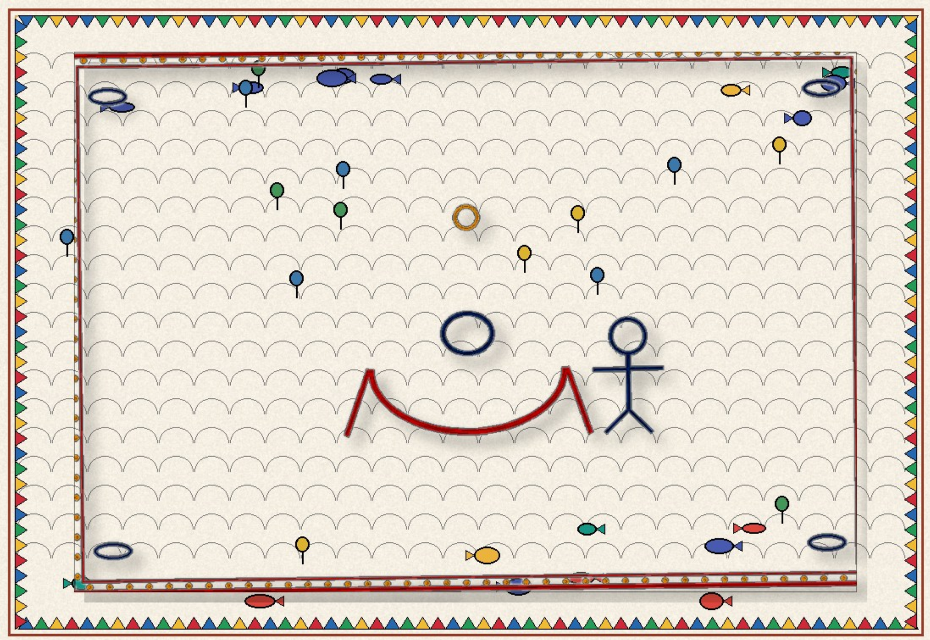

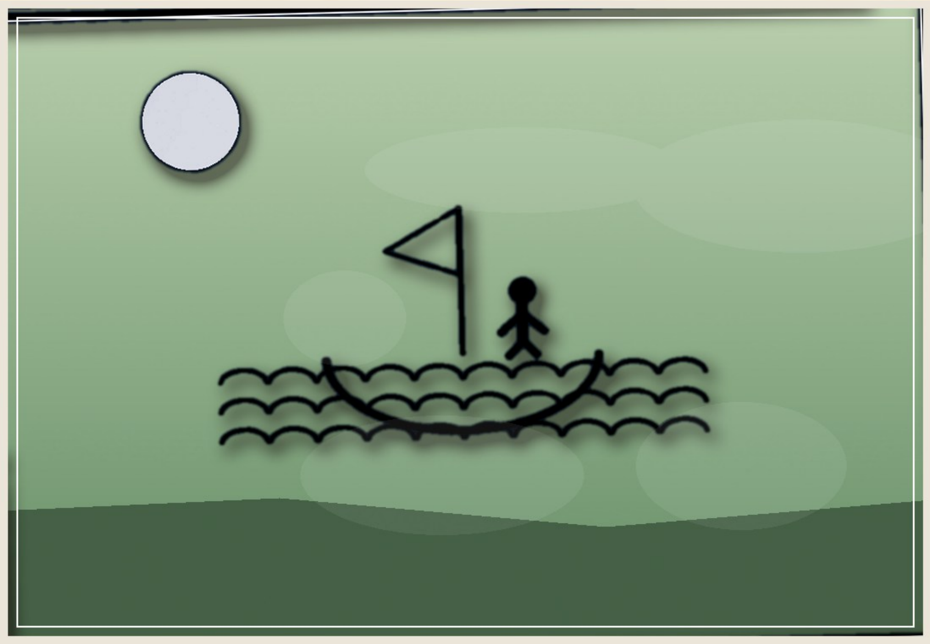

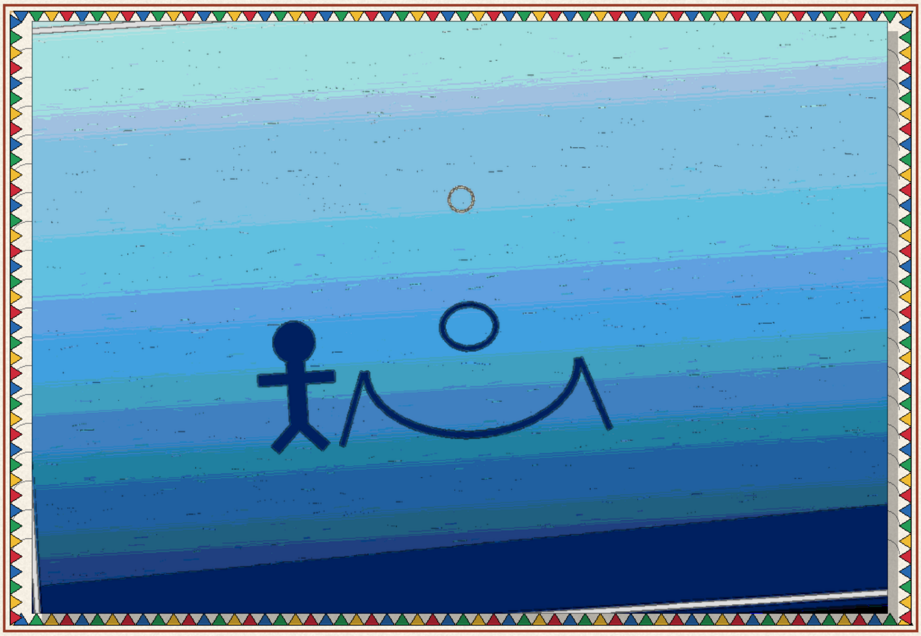

चित्र 12

बूढ़ मलाह ओकरा देखि आँखि मिचकाबथि — 'ई बालक साधारण नहि। एकर आँखिमे शिवालाक दीपक लौ छै।' तपस्या मोन छलनि सभकेँ, आ मोनमे एकटा आस जागल छल — मुदा केओ मुँहसँ नहि बाजल। वरदानक चर्च समयसँ पहिने कएल जाए त' वरदान लजा जाइत अछि।

अमरसिंह बढ़ैत गेलाह — आ हुनक संगे बढ़ैत गेल बैदलाक आतंक। दुनू एक्कहि कालखण्डमे पैघ भऽ रहल छल: एक दिस अत्याचारक गाछ, दोसर दिस ओकर कुड़हरि।

अध्याय ७ : अखराहाक माटि

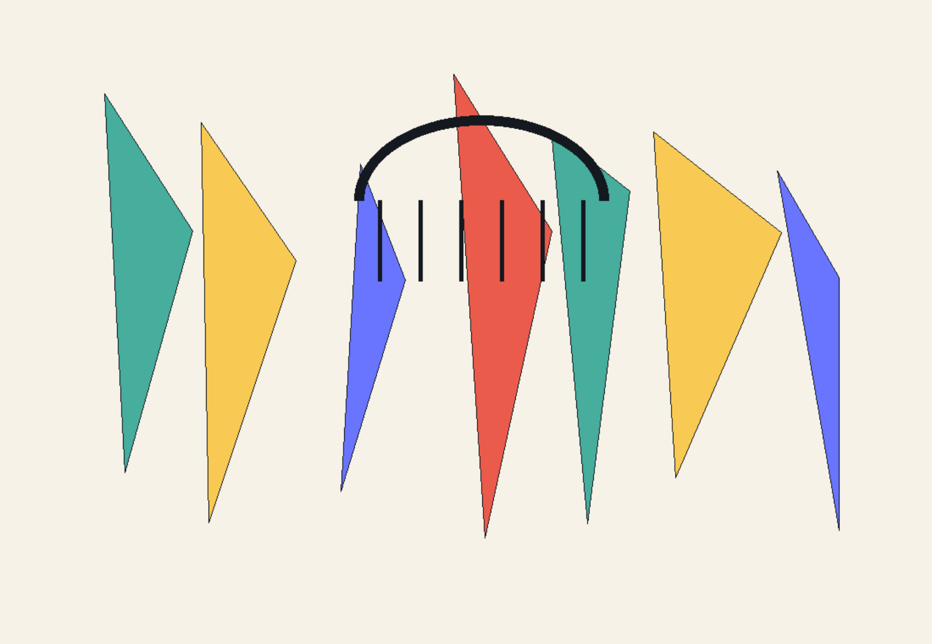

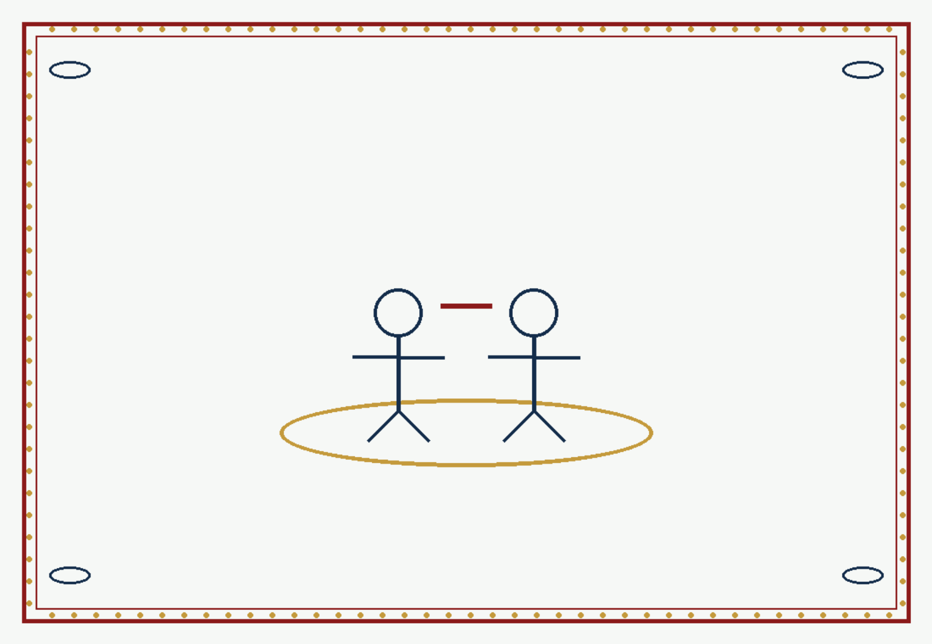

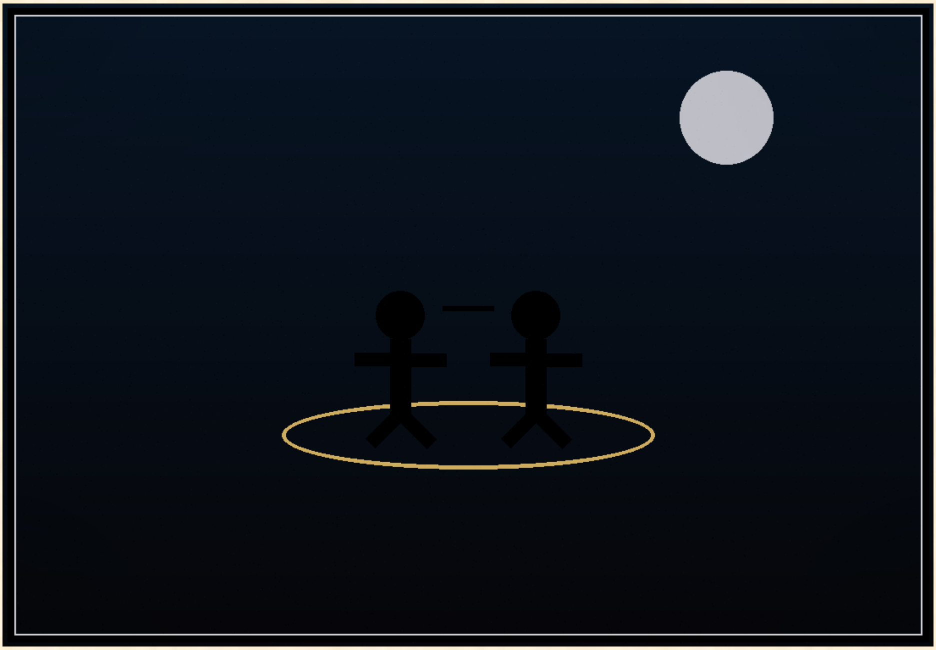

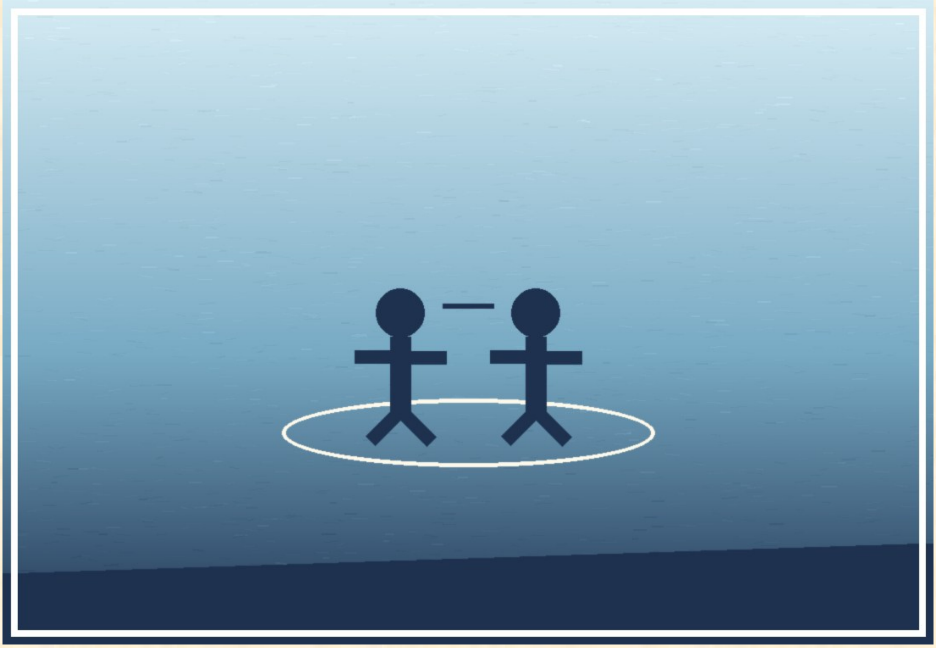

चित्र 13

अमरसिंह जुआन भेलाह त' हुनक ठेकान भेल अखराहा। भोरे कमलामे डूम, फेर घाटक अखराहामे दण्ड-बैसकी, कुश्ती, मुदगर। देह एहन बनल जे लोक कहए — 'शिवरा गाममे पाथरक देवता जागल अछि।'

मुदा बलसँ बेसी चर्च हुनक स्वभावक छल। कमजोरक आगाँ नरम, अभिमानीक आगाँ पहाड़। घाटपर ककरो नाव फँसए त' पहिने अमरसिंहक कान्ह पहुँचए; ककरो जाल छीनल जाए त' पहिने अमरसिंहक मुट्ठी।

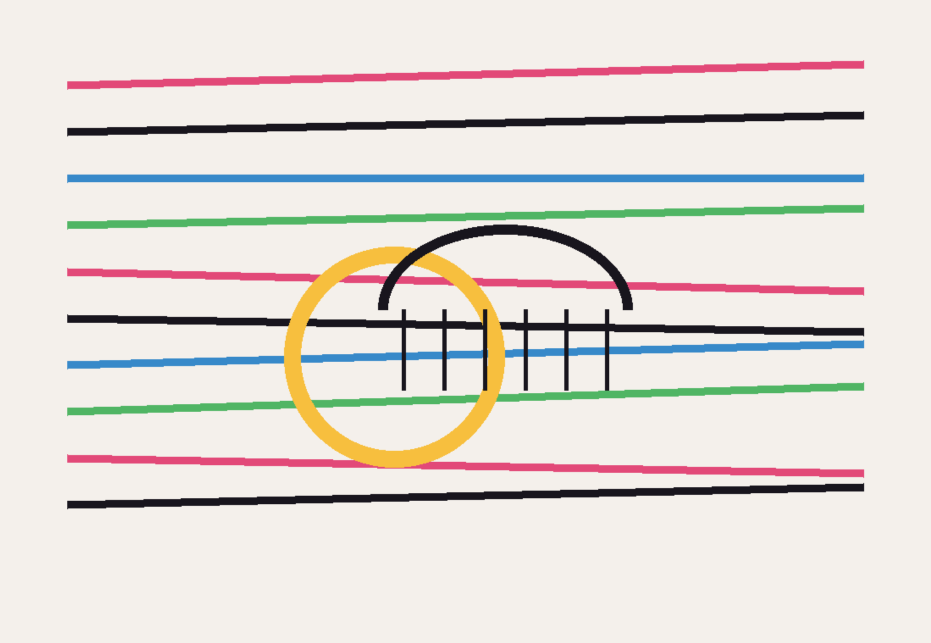

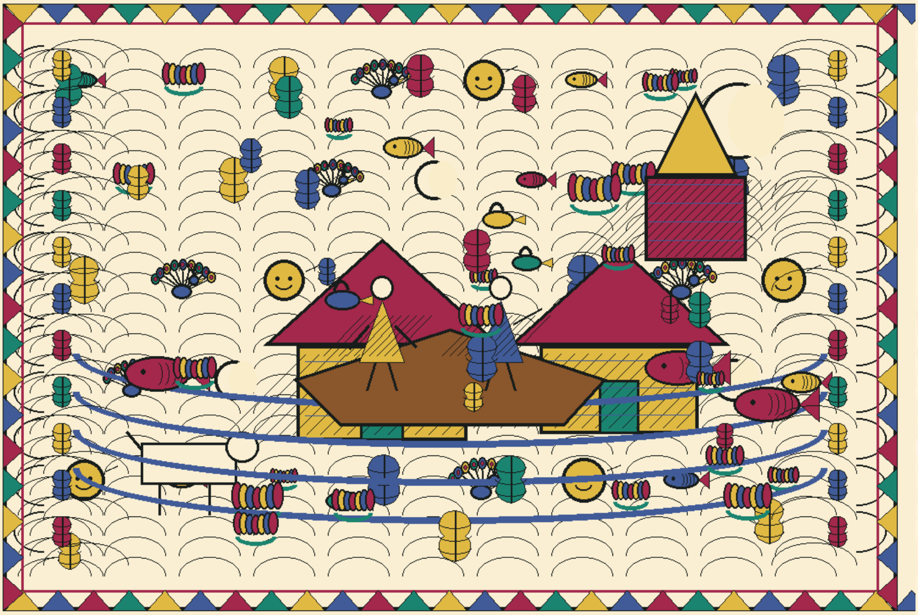

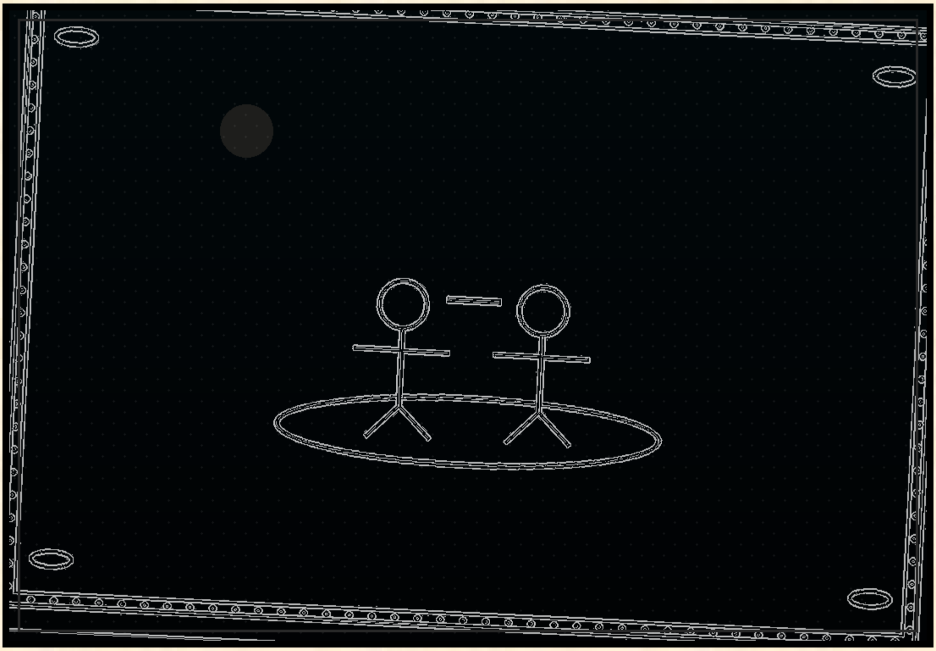
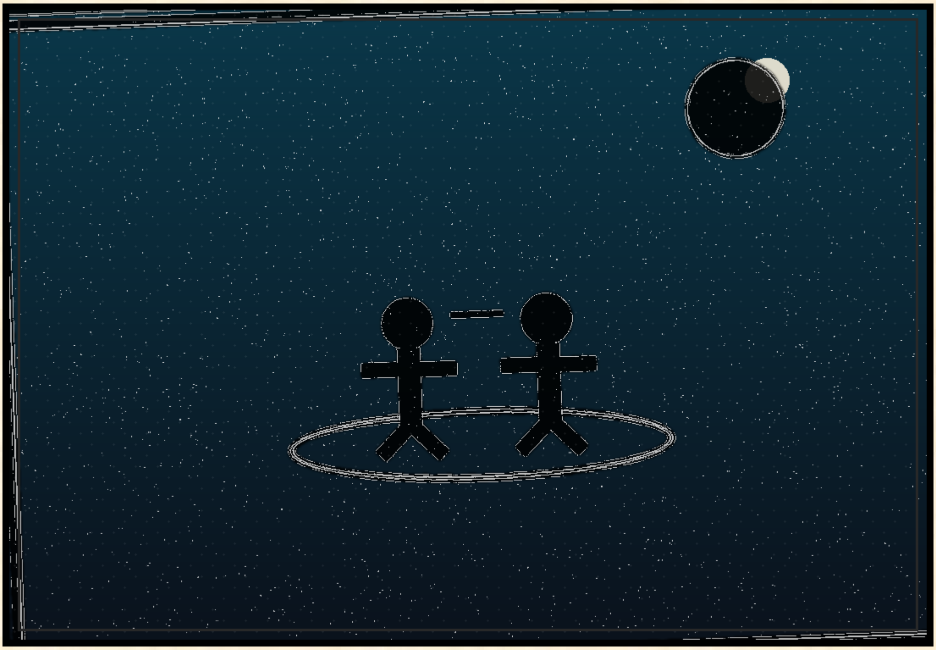

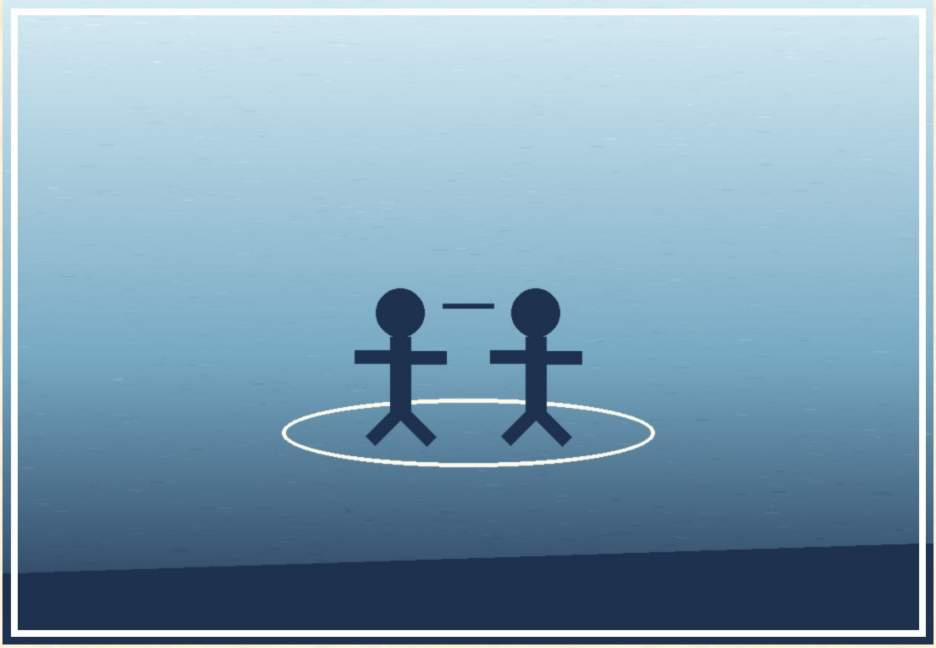

चित्र 14

आ हुनक करेजमे एकटा बात गड़ल छल — बैदलाक ओ घोषणा। कमला हुनका लेल खाली धार नहि छलीह; माए छलीह, जकर पानिसँ हुनक पहिल स्नान भेल छल। माएपर कुदृष्टि — आ बेटा चुप रहए?

एक साँझ अमरसिंह अपन गुरु-समान बूढ़ मलाहसँ पुछलनि, 'बैदलाक अखराहामे आइ धरि केओ माटि किए ने देलकै?' बूढ़ हँसलाह — 'कारण ओहि माटिक प्रतीक्षा तोरे देह करैत छलौ, बाबू।' — आ ओही राति अमरसिंह निर्णय कऽ लेलनि।

अध्याय ८ : चुनौती

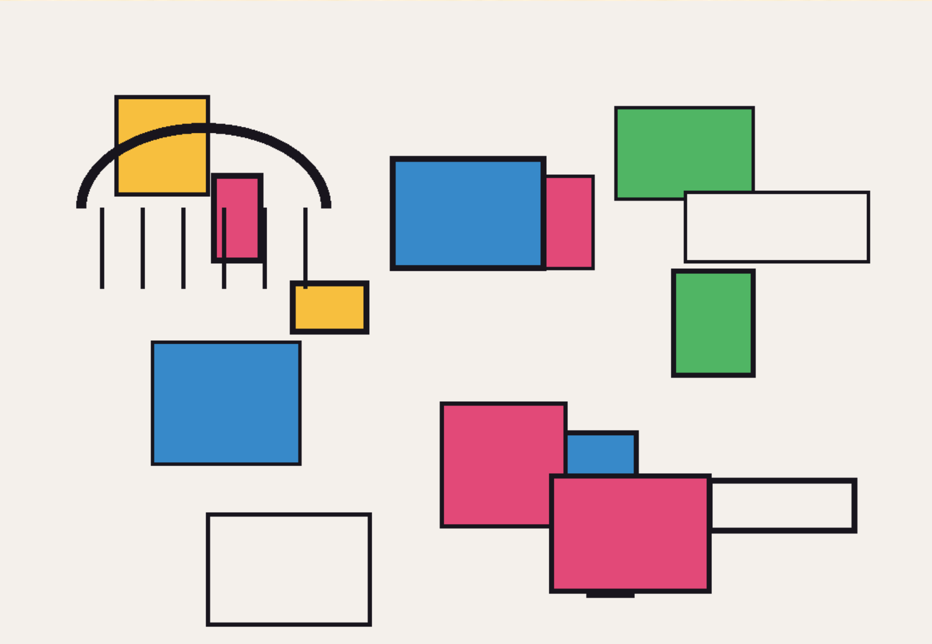

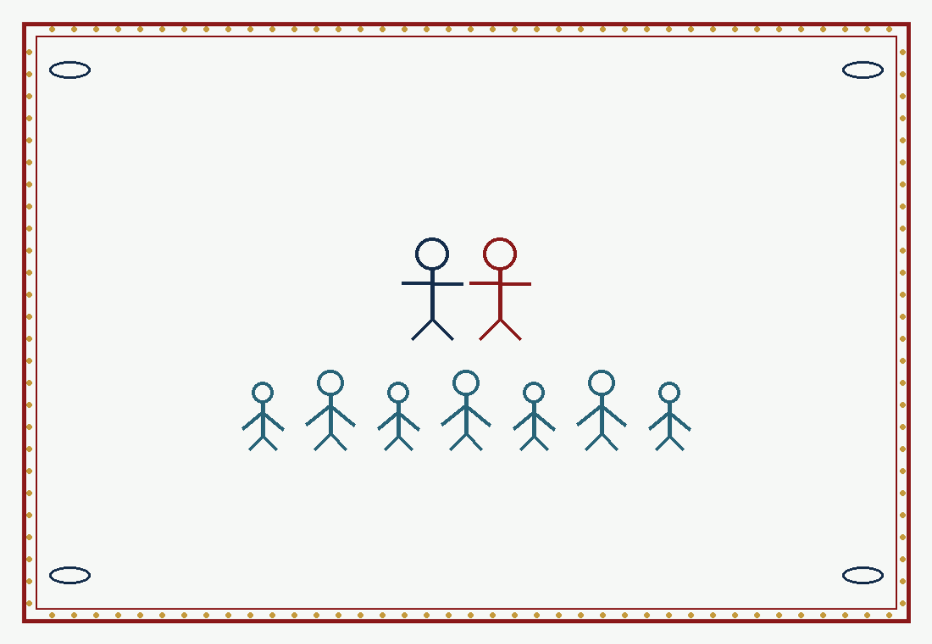

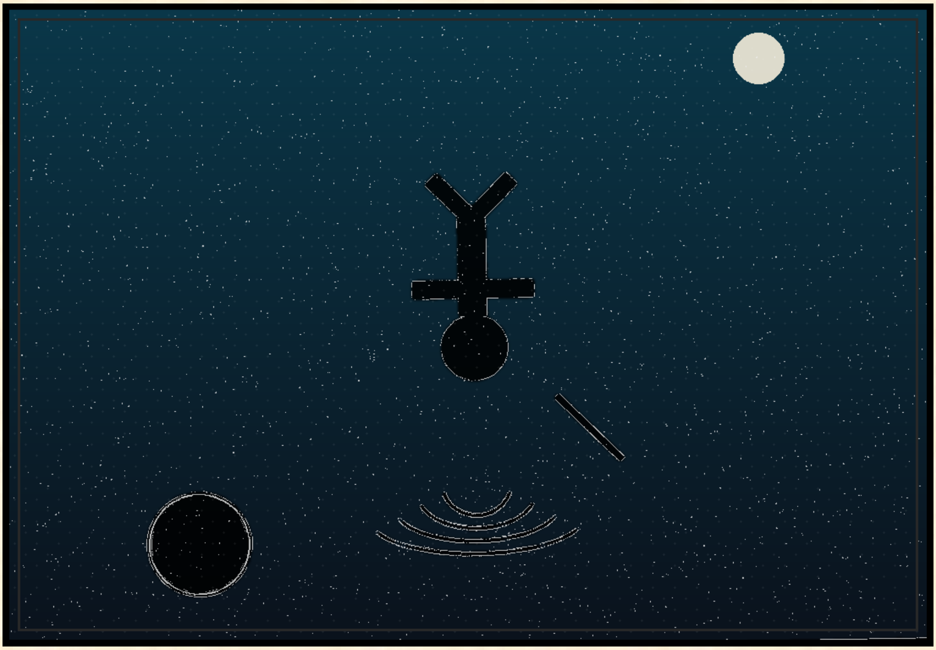

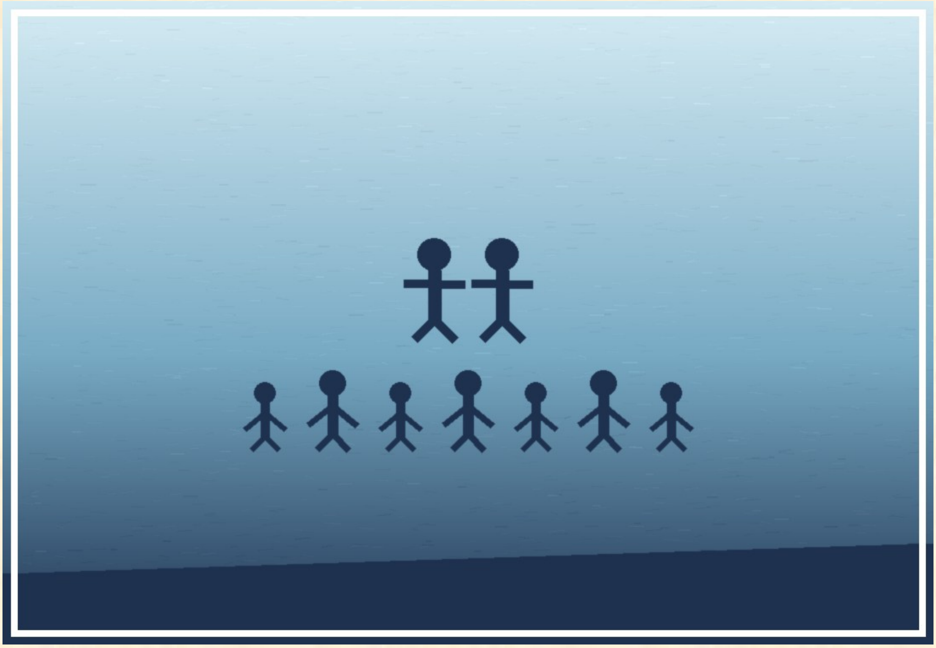

चित्र 15

अगिला भोर बैदलाक अखराहामे एकटा नव आवाज गूँजल — 'बैदला! शिवरा गामक अमरसिंह तोरा माटि दैत छौ!'

माटि देब — अखराहाक भाषामे चुनौती। बैदला हँसल; ओकर लठैत सभ ठहाका मारलक। 'ई छौड़ा? मलाहक बेटा? हमरा सँ?' — बैदला जिनगी भरि खाली जीतल छल, तेँ ओ बिसरि गेल छल जे सभ जीतनिहारक एकटा अन्तिम कुश्ती लिखल रहैत छै।

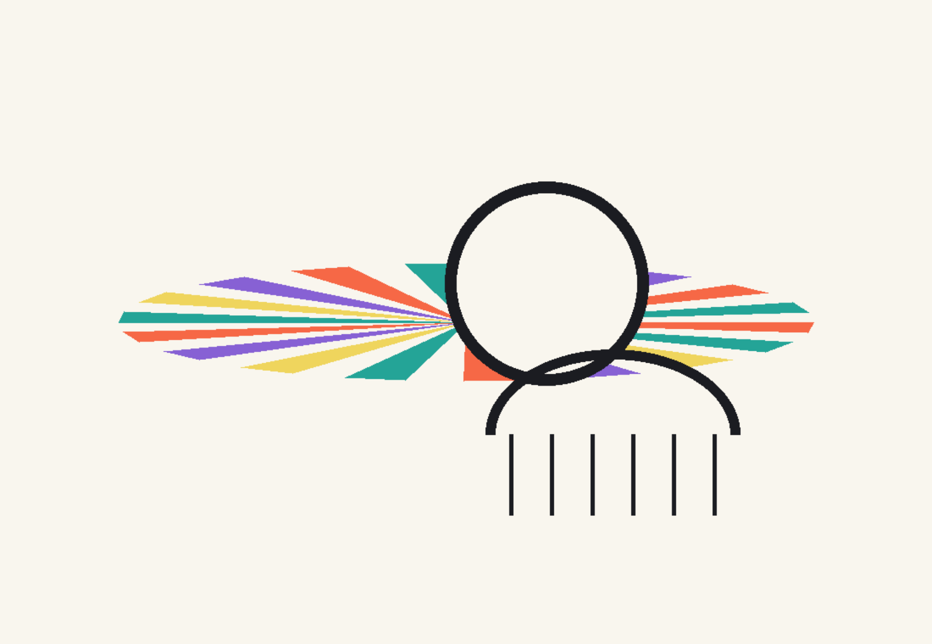

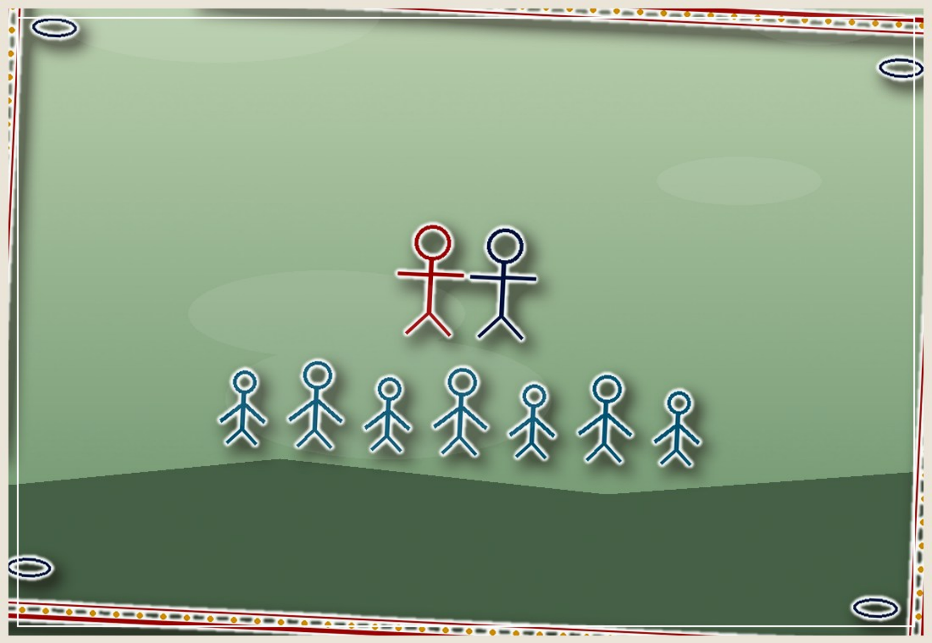

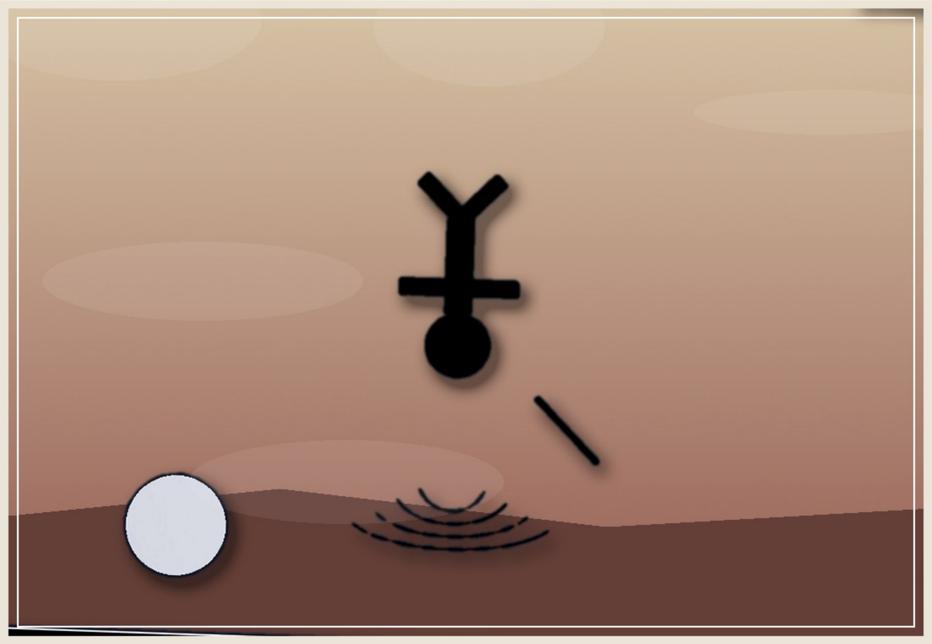

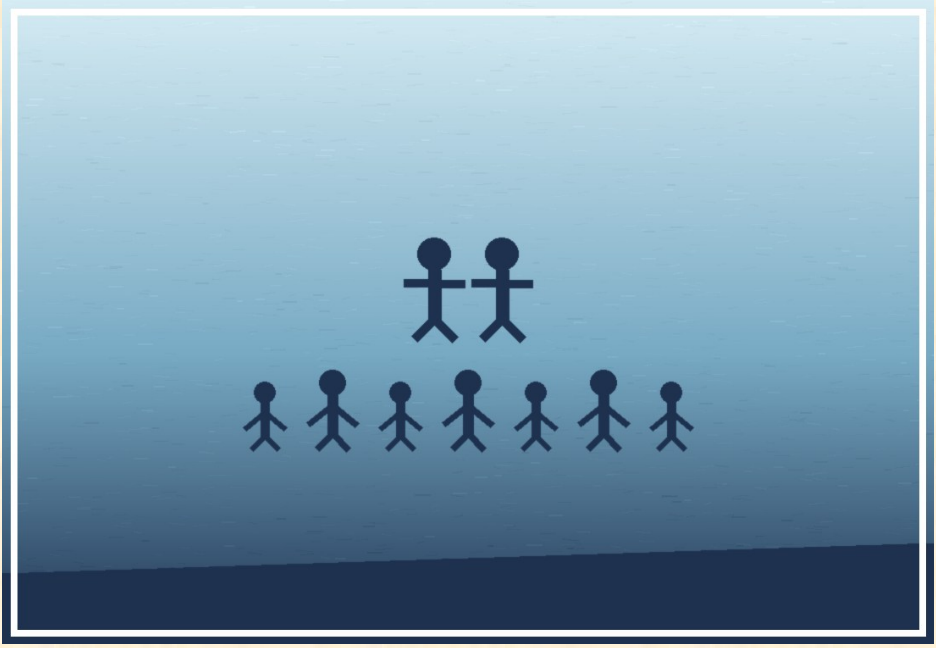

चित्र 16

मुदा गामक लोक नहि हँसल। लोक चुपचाप घाटपर जुटए लागल — किसान, मलाह, बूढ़, बच्चा। सभक आँखिमे एक्कहि प्रश्न: की ई बालक साँचे…? आ सभक करेजमे एक्कहि प्रार्थना, जे तीन बरख पहिने शिवालामे कएल गेल छल।

कमला धार सेहो ओहि दिन थम्हल-थम्हल बहलीह — जेना माए साँस रोकि कऽ बेटाक परीक्षा देखि रहल होथि। अखराहाक माटि कोड़ल गेल, सिन्नुर-अक्षत छींटल गेल, आ दुनू पहलमान आमने-सामने ठाढ़ भेलाह — अत्याचार आ उत्तर।

अध्याय ९ : युद्ध

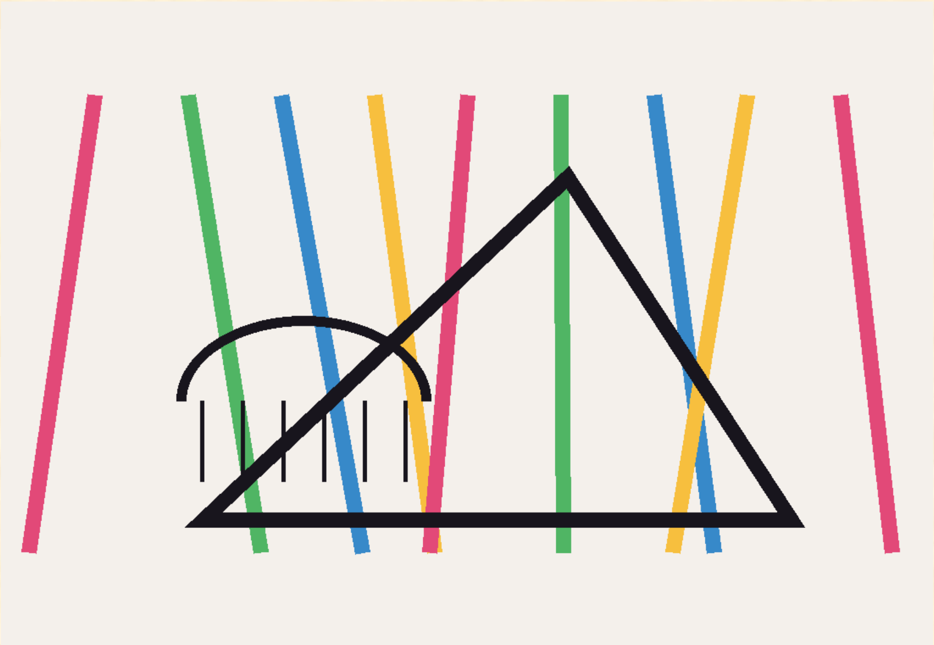

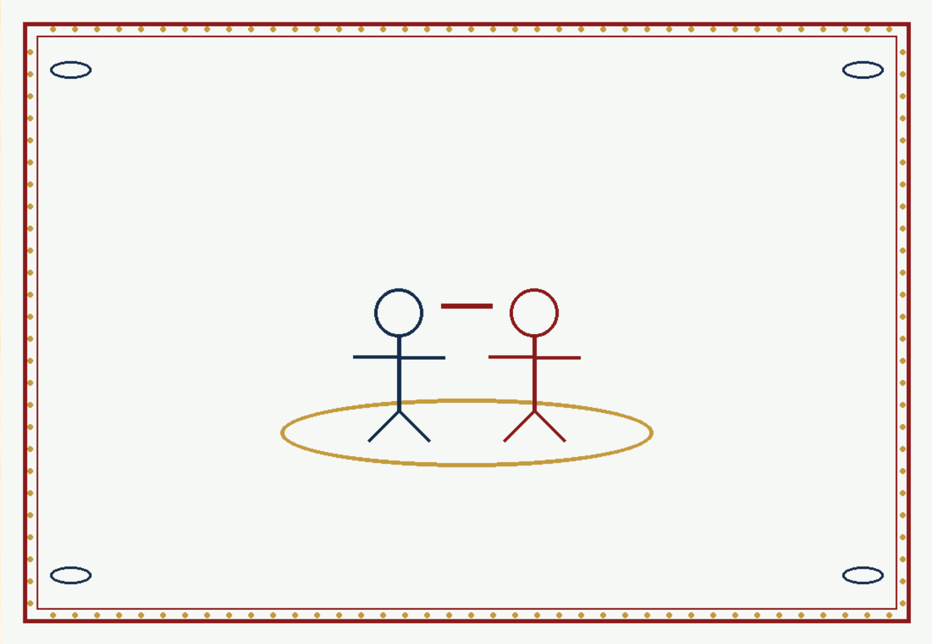

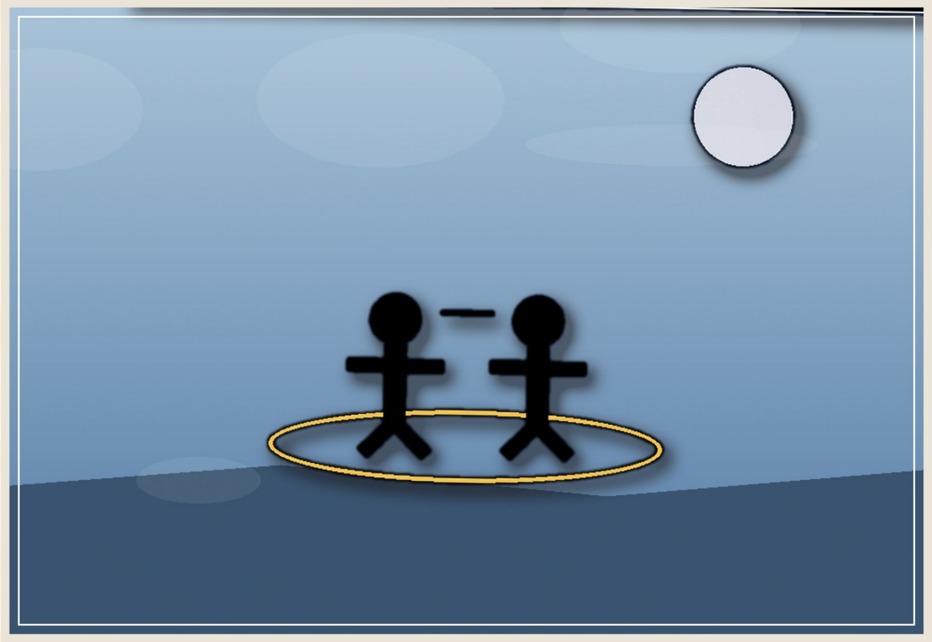

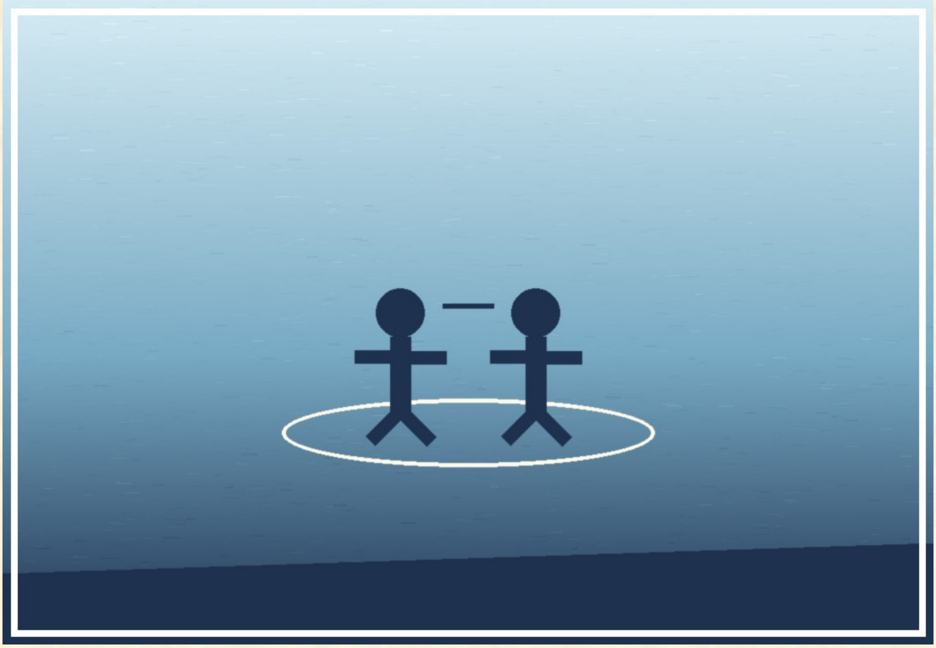

चित्र 17

युद्ध भेल — आ केहन युद्ध! बैदला अनुभवी छल, दाँव-पेच सभ जनैत छल; अमरसिंह लग छल जुआनीक आगि आ माएक लाजक बल। पहिल भिड़न्तमे दुनू पहाड़ जकाँ टकराएल — घाटक बालु धधरा जकाँ उड़ल।

बैदला दाँव मारलक — अमरसिंह छिटकि कऽ खसल, लोकक साँस अटकल। मुदा खसब आ हारब एक बात नहि। अमरसिंह उठलाह — आ उठैत काल हुनक हाथ अखराहाक माटि छूबि माथसँ लगओलक। ओ माटि आब खाली माटि नहि छल; ओहिमे कमलाक कछेरक अंश छल।

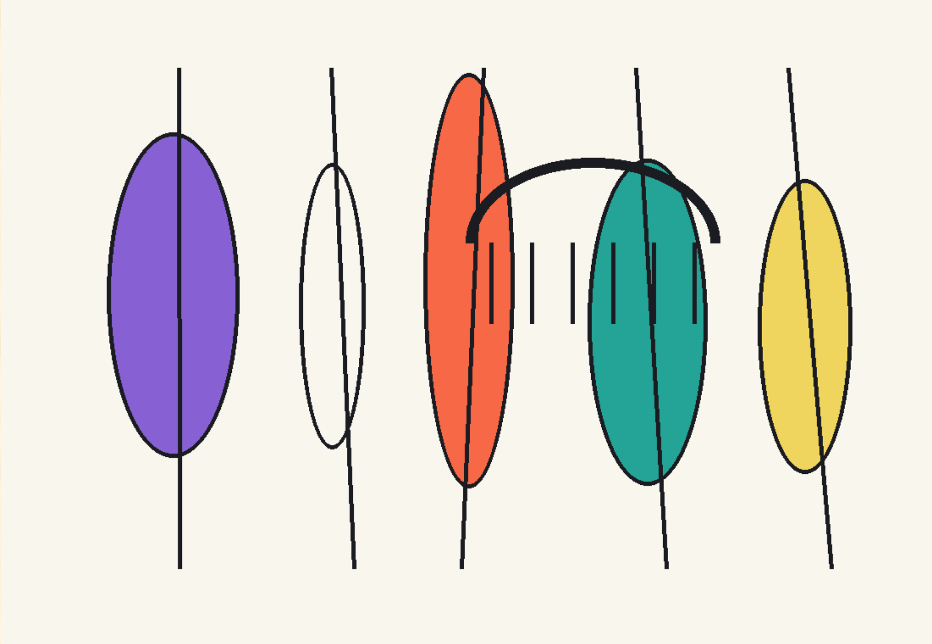

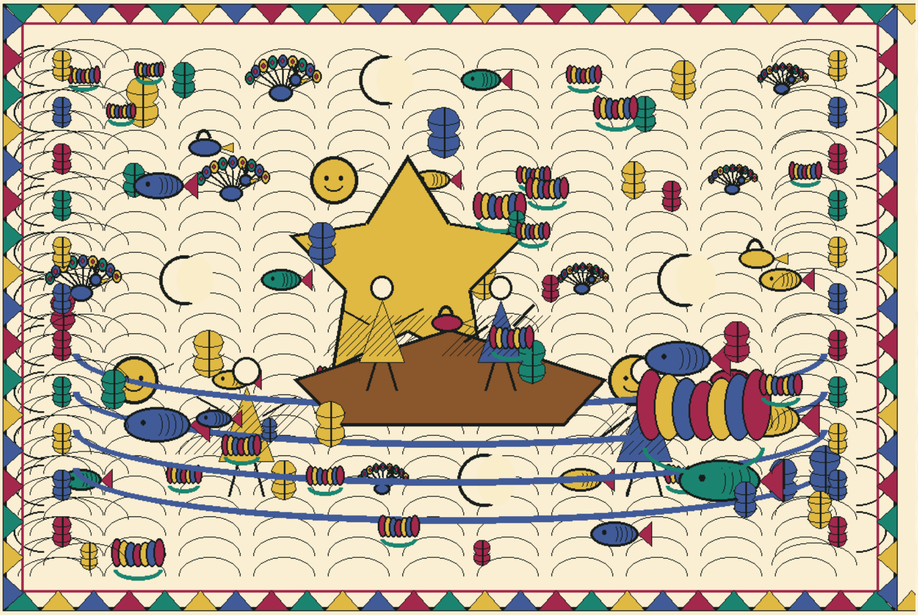

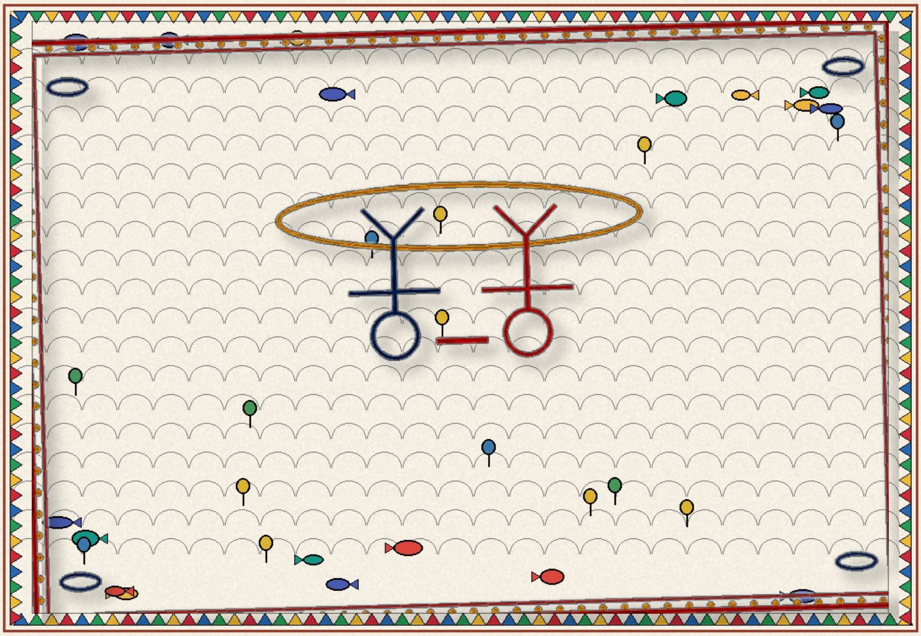

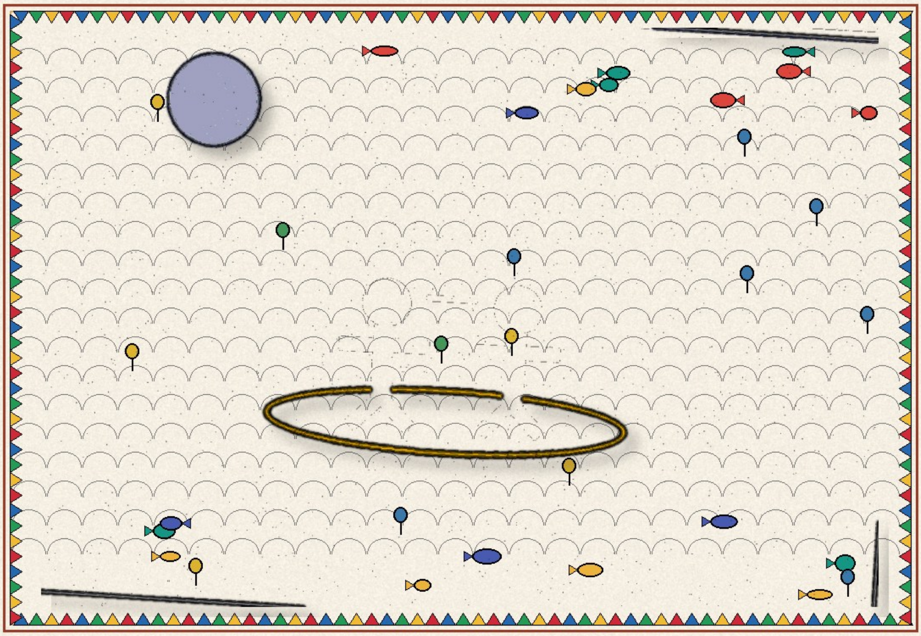

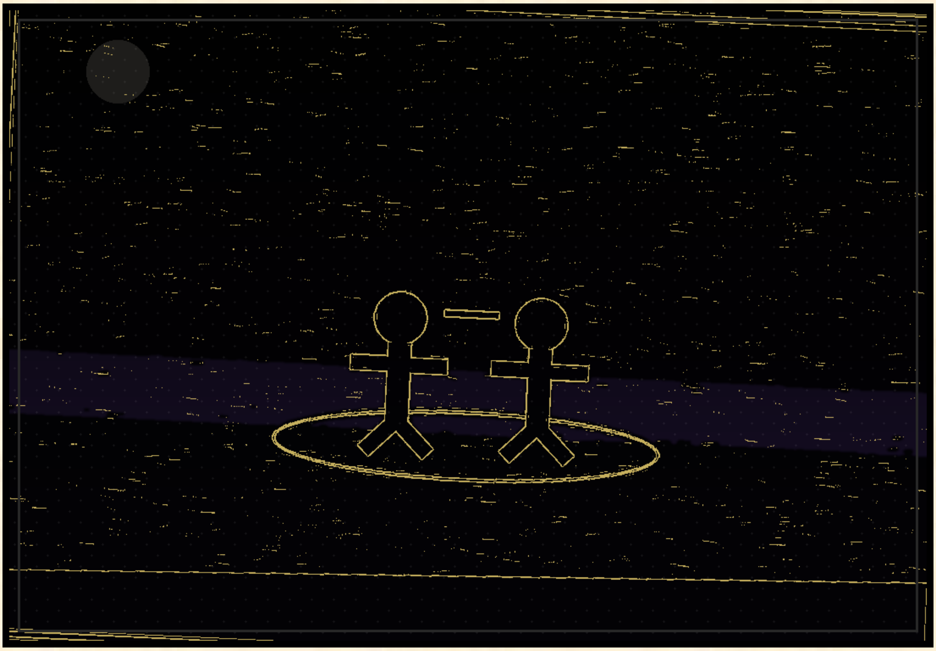

चित्र 18

फेर जे भेल, से देखनिहार पीढ़ी-दर-पीढ़ी कहैत मरल। अमरसिंहक पकड़ि बज्र भेल, बैदलाक दाँव एक-एक कऽ टूटल। अन्तिम पटकनीमे धरती डोलल — आ बैदला फेर नहि उठल। मारल गेल बैदला — ओही घाटपर, जतय ओ देवी-धारसँ बरजोड़ीक डंका पीटने छल।

घाटपर पहिने सुन-सन्नाटा भेल, फेर जयकार फूटल — 'जय कमला माए! जय अमरसिंह!' मलाह सभ कनैत-हँसैत एक-दोसराकेँ जकड़ि लेलक। कए बरख पुरान तपस्याक उत्तर हुनका सभक आगाँ माटिमे लेटाएल ठाढ़ छल। मुदा — खिस्सा एतय खतम नहि भेल। जीत सदिखन अन्त नहि होइत अछि; कखनो काल ओ एकटा आओर कठिन अध्यायक आरम्भ होइत अछि।

अध्याय १० : जीतक छाह

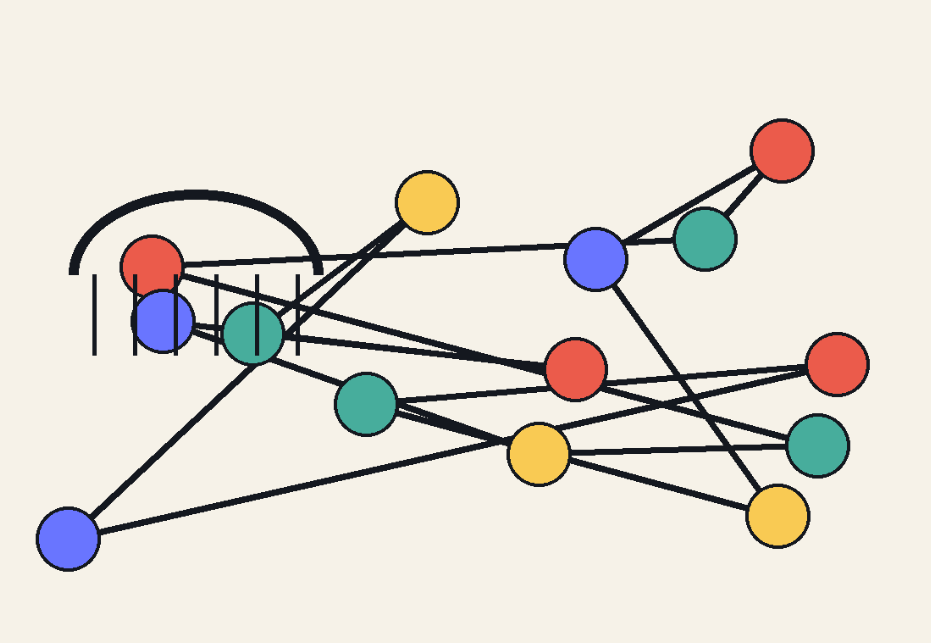

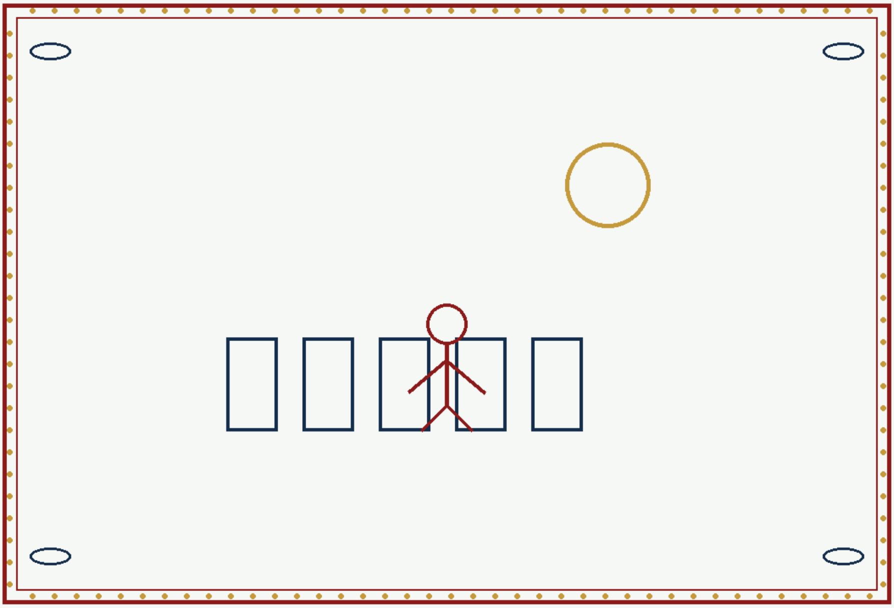

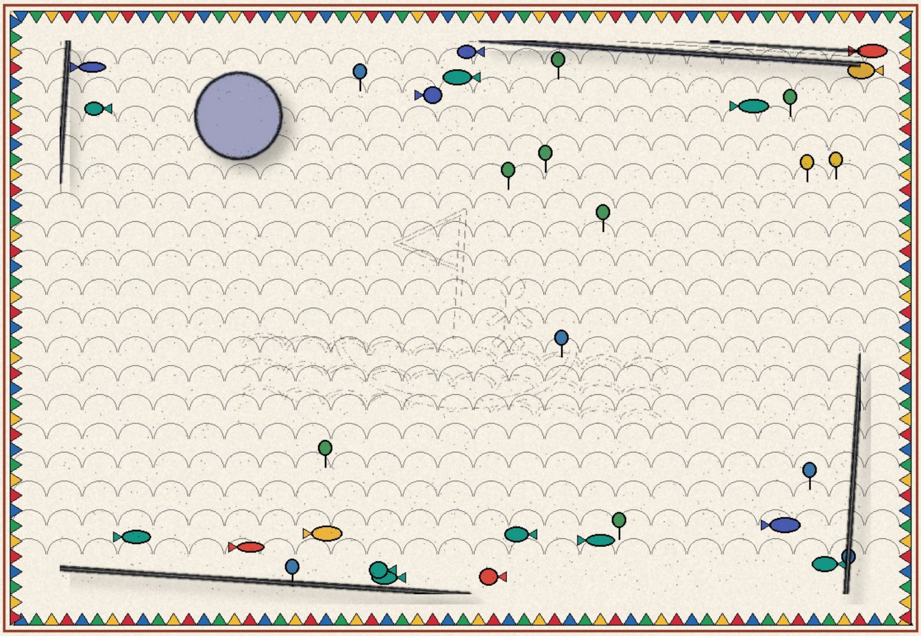

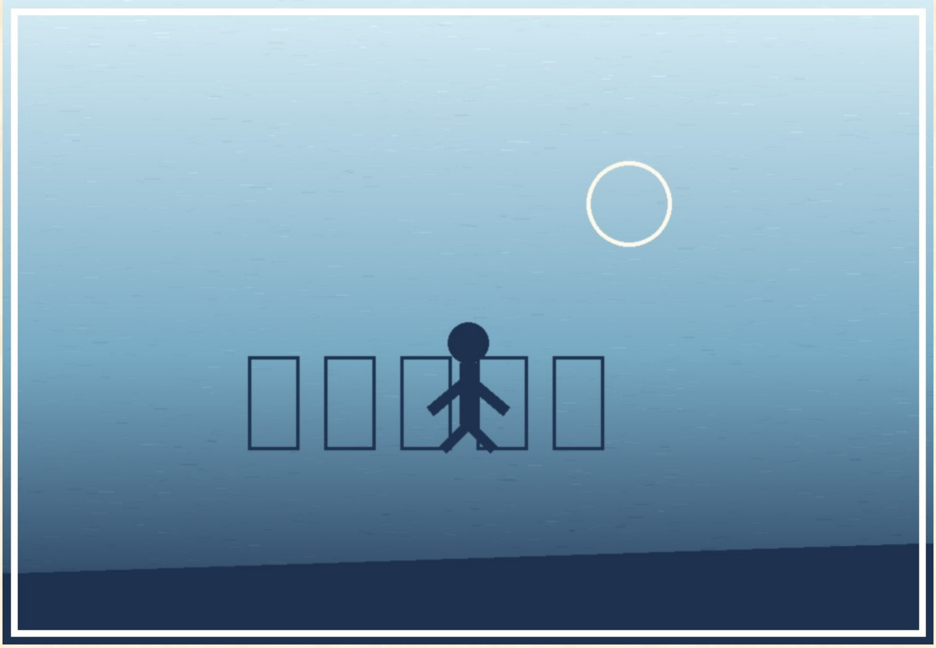

चित्र 19

बैदला मरल, मुदा बैदलाक खानदान बाँचल छल — आ संगहि बाँचल छल प्रतिशोधक बीआ। मलाह लोकनिक मोनमे डर बैसल: 'बैदलाक वंश जँ रहत, त' काल्हि फेर कोनो बैदला ठाढ़ हएत। खानदाने नष्ट हो।'

ई माँग सुनि अमरसिंहक करेज पहिल बेर डोलल। अखराहामे शत्रुसँ लड़ब एक बात — मुदा ओकर घर धरि जाएब? ओतय त' बैदलाक गर्भवती कनियाँ छलि — आ गर्भमे ओकर सन्तान।

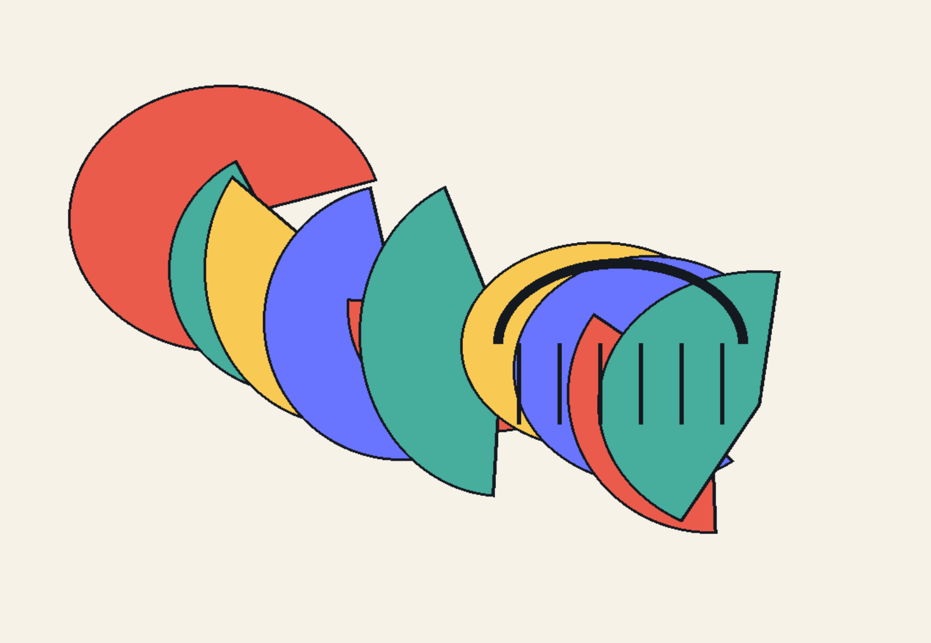

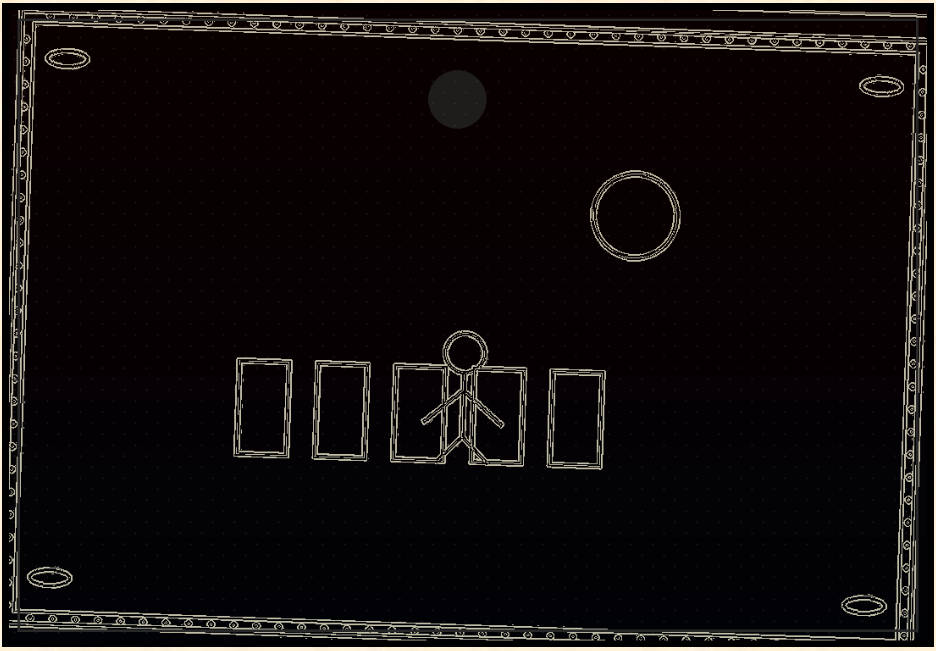

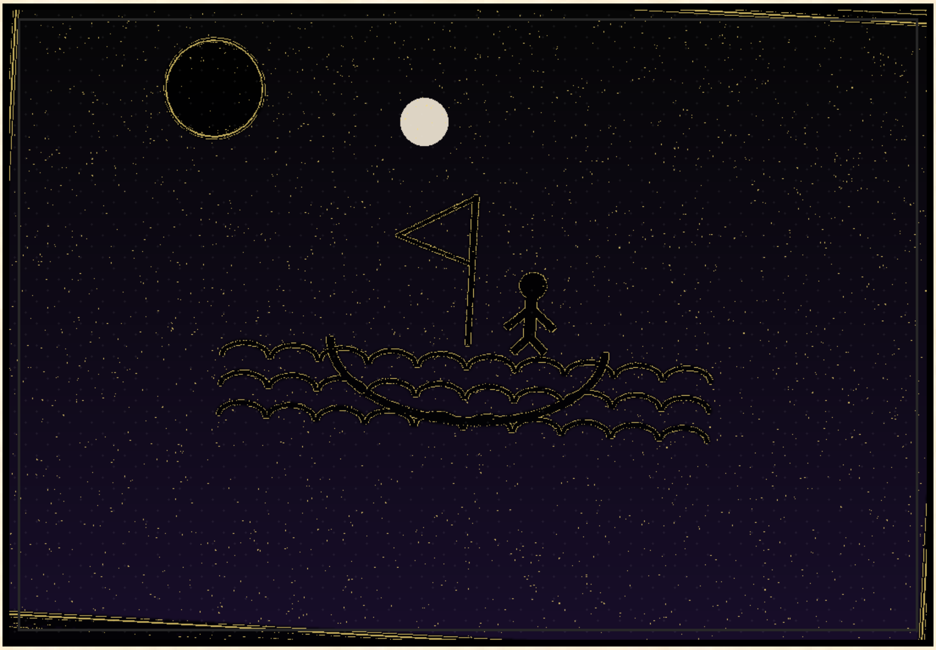

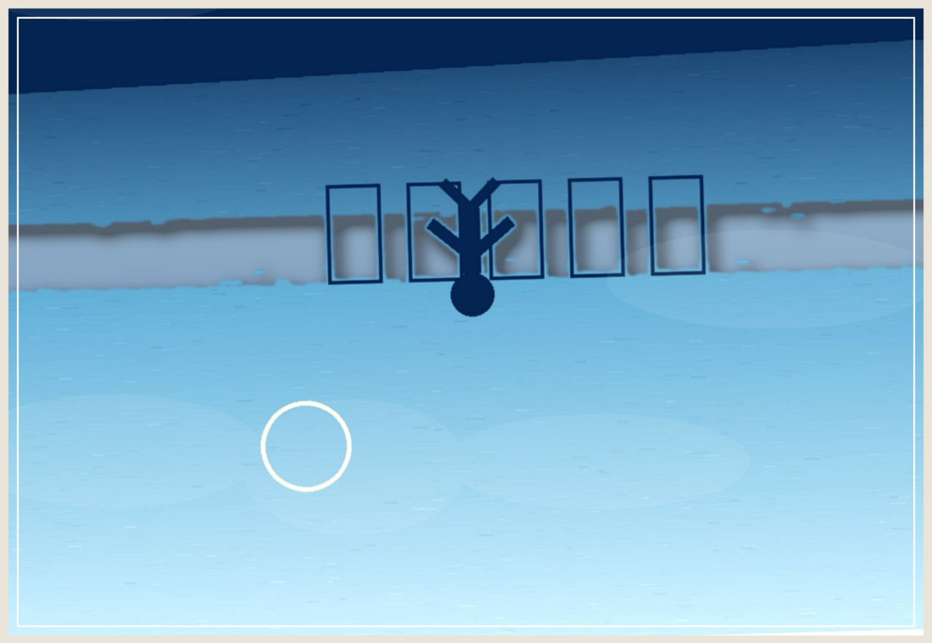

चित्र 20

मुदा भयक अपन तर्क होइत छै, आ भीड़क अपन वेग। जे भेल, से गाथाक सभसँ अन्हार पन्ना थिक — अमरसिंह बैदलाक गर्भवती कनियाँकेँ मारि देलनि। गाथा एहि ठाम आँखि नीचाँ कऽ लैत अछि; हम सेहो करी। वीरताक तरुआरि जखन डरक हाथमे चलि जाइत अछि, तखन ओ जे काटैत अछि, से घा’ बनि कऽ काटनिहारेक करेजमे रहि जाइत अछि।

आ नियति देखू — ओही क्षण ओ बच्चा जनमि गेल। मुइल माएक कोखिसँ जीवित बेटा — आ बड्ड बलगर। जेना काल कहि रहल हो: 'हिसाब एतेक आसान नहि, अमरसिंह।' नवजात बालक — बैदलाक रक्त, बैदलेक बल — आब ओहि धरतीपर साँस लऽ रहल छल जतय ओकर पिता आ माता दुनू मारल गेल छलाह।

अध्याय ११ : कमलाक भेद

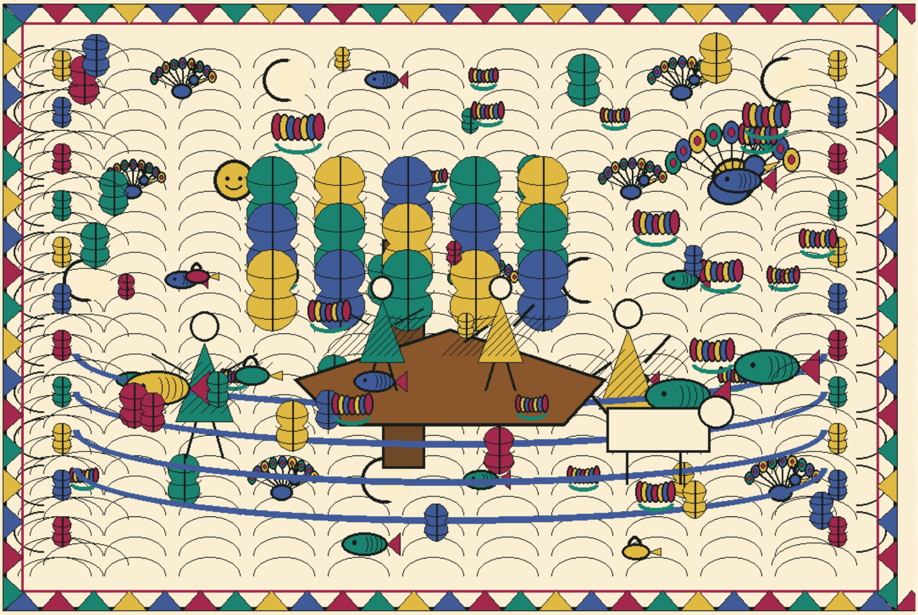

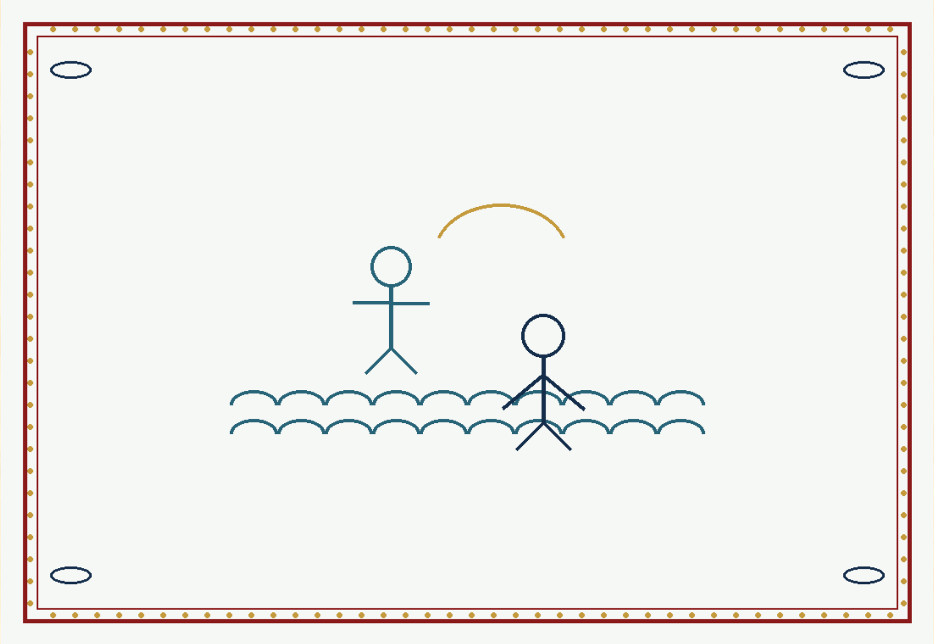

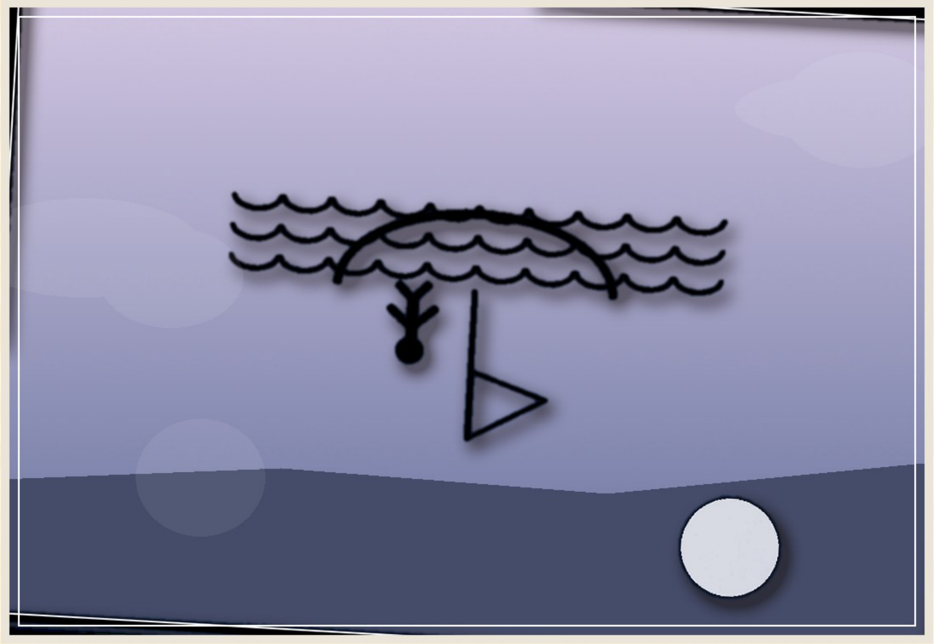

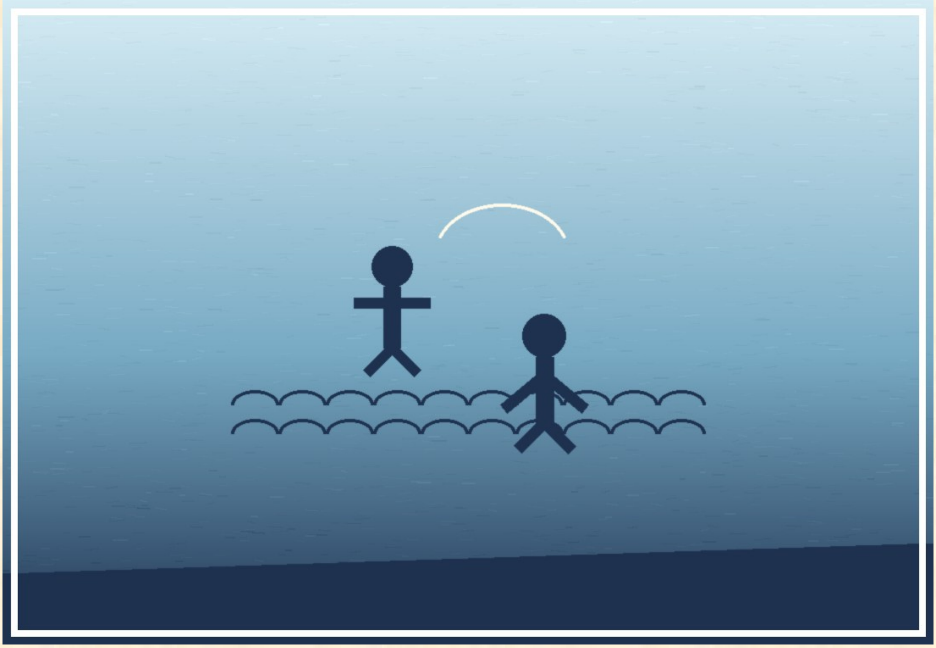

चित्र 21

ओ बालक जेना-जेना बढ़ल, बुझना गेल जे बैदलाक बल ओहिमे दूना भऽ कऽ उतरल अछि। साधारण चोट ओकरा छूबि नहि सकैत छल; साधारण बन्हन ओकरा बान्हि नहि सकैत छल। मलाह टोलीमे फेर वैह पुरान डर घुरि आएल — आब त' पहिनेसँ बेसी।

अमरसिंह ओकरा सोझाँ भेलाह, मुदा सभ दाँव खाली गेल। जे वीर बैदलाकेँ पछाड़ने छल, से ओकरे बेटाक आगाँ पहिल बेर निरुपाय ठाढ़ छल। कारण ओहि बालकक प्राणक भेद ककरो बुझल नहि छल।

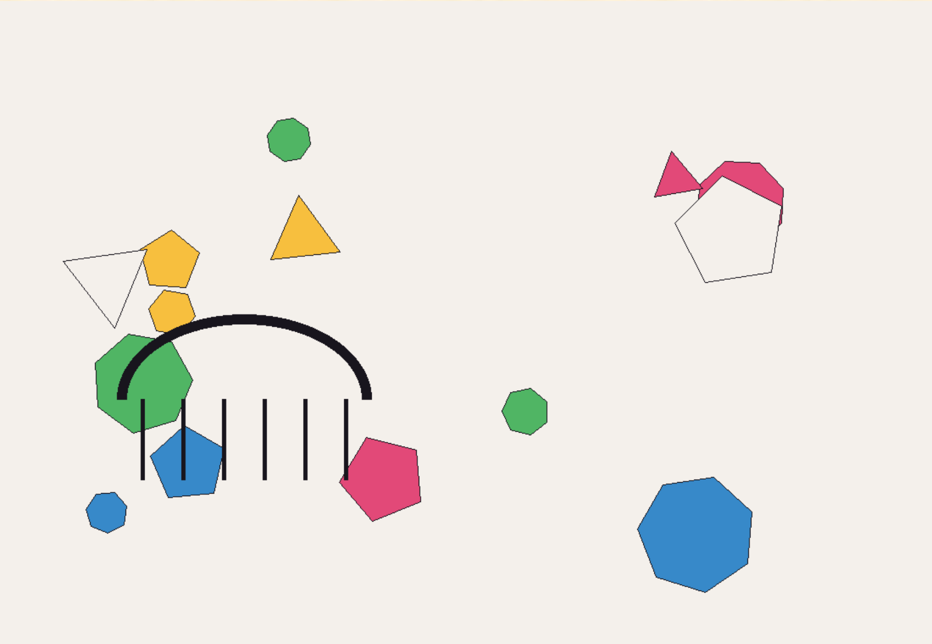

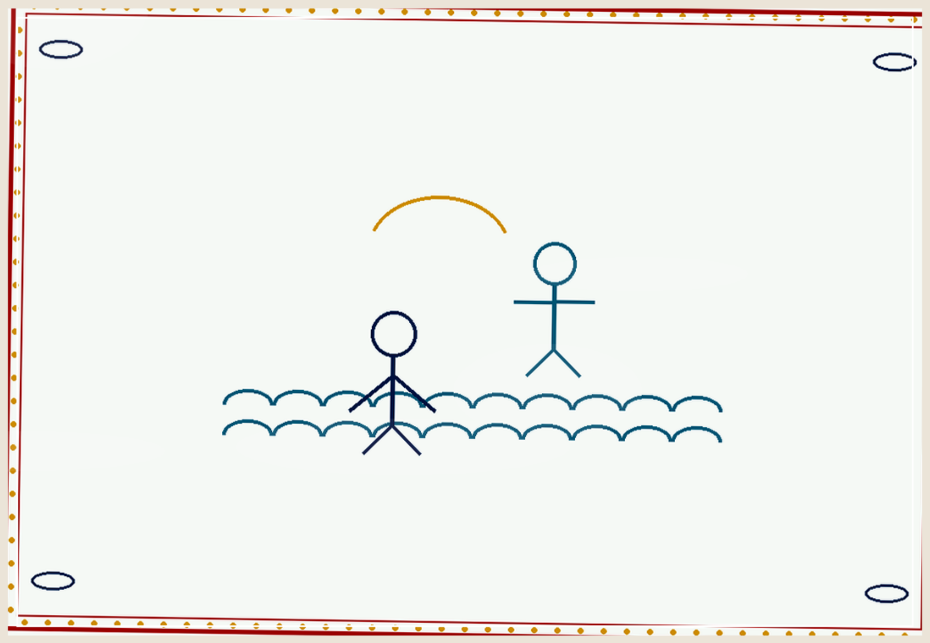

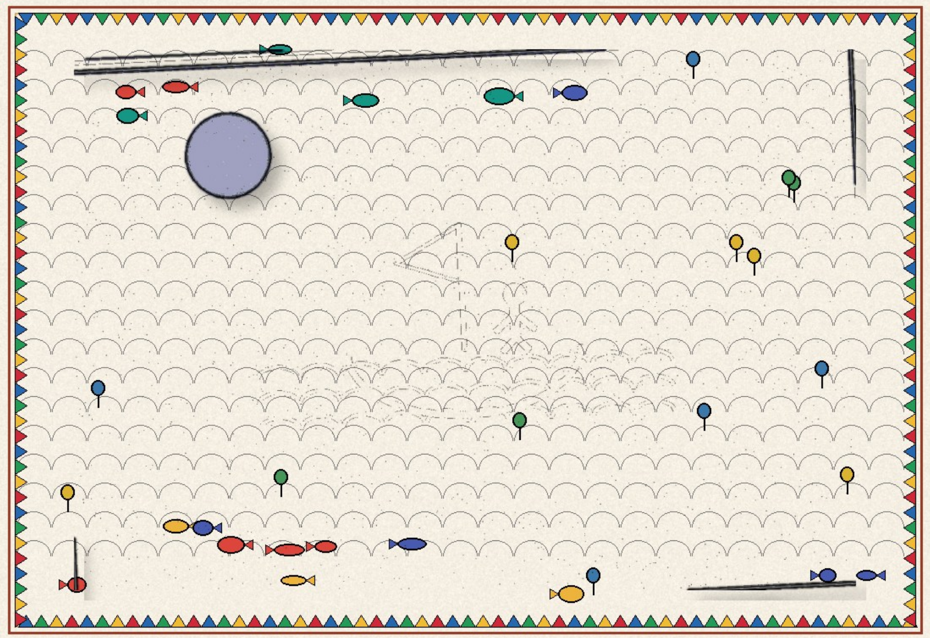

चित्र 22

तखन बजलीह कमला धार अपने। जे माए एतेक दिन चुप छलीह, से अपन रक्षक बेटाकेँ भेद बतओलनि — ओहि बालकक बल कतय बसैत अछि आ कोन उपायसँ ओ शान्त हएत। देवीक बताओल बाट — आ अमरसिंह ओही बाटे बैदलाक बेटाकेँ मारलनि। ओ बाट ओ ककरो नहि बतौलनि।

अन्तिम शत्रु खसल, आ संगहि खसल ओ पूरा अध्याय — बलजोड़ीक, प्रतिशोधक, रक्तक। घाटपर फेर शान्ति उतरल। मुदा ई शान्ति पहिलुक सन निर्मल नहि छल; एहिमे एकटा गम्भीर उदासी घोरल छल। अमरसिंह ओहि साँझ बहुत काल धरि कमलाक कातमे असगरे बैसल रहलाह — विजयी, मुदा भारी। रक्षाक मूल्य ओ चुका चुकल छलाह, आ मूल्य सस्ता नहि छल।

अध्याय १२ : गहमर : अमर बाबा

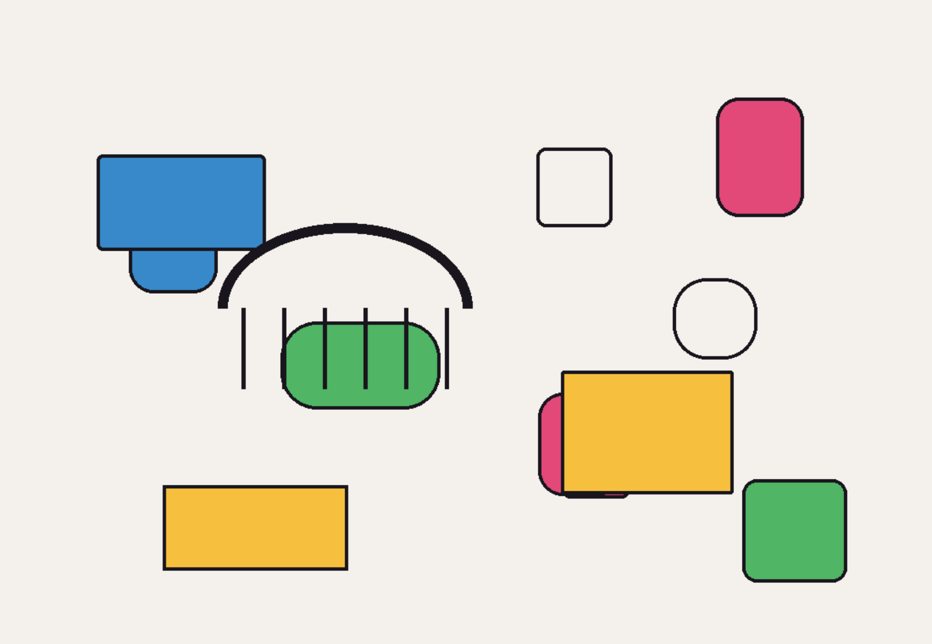

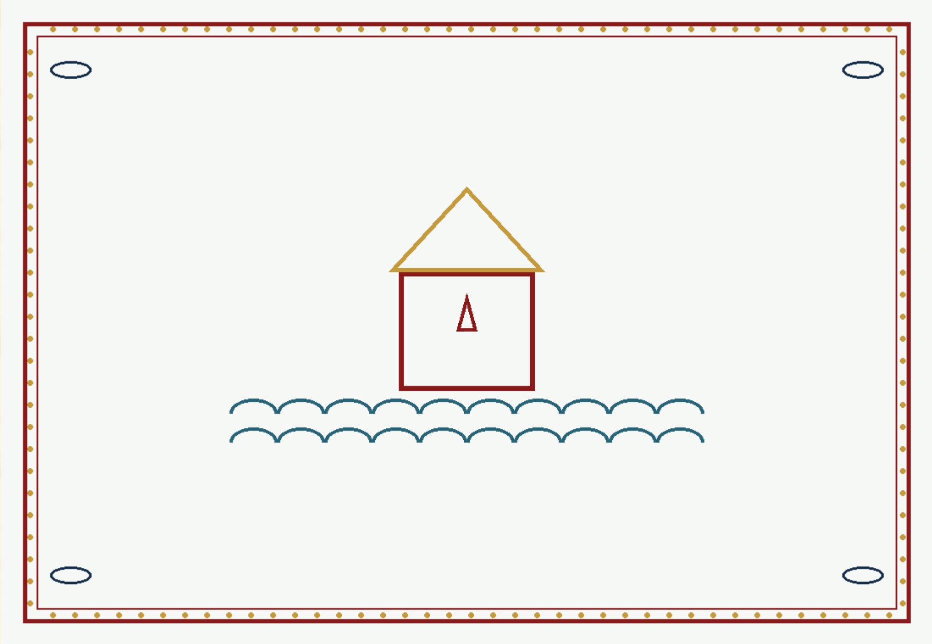

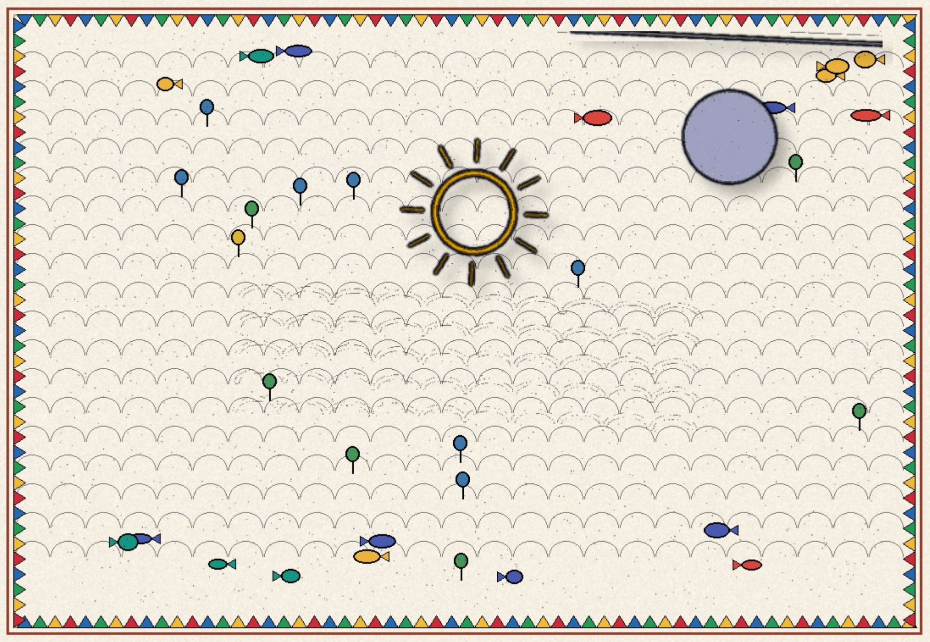

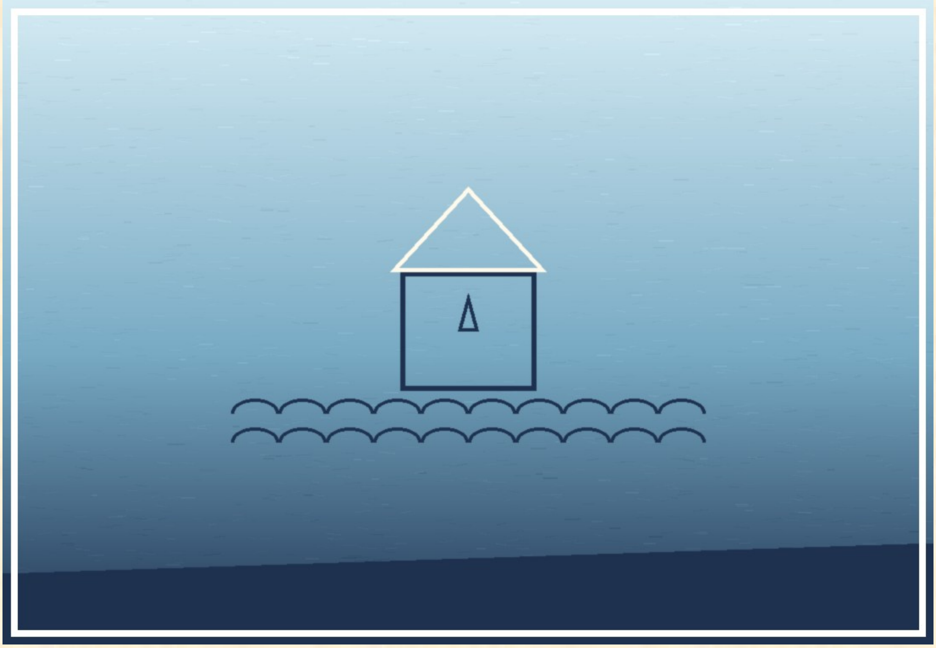

चित्र 23

समय बहैत गेल — कमलाक पानि जकाँ। अमरसिंह जाबत जीलाह, कमलाक कात आ मलाह टोलीक रखबारि करैत रहलाह। आ जखन हुनक देह-यात्रा पूरल, त' मलाह लोकनि हुनका बिसरलनि नहि — बिसरितथि कोना? जे प्राण हुनक लाज लेल जनमल छल!

मलाह लोकनि अमरसिंहक गहमर बनओलनि — कमला धारक कात। आ आइयो, एतेक पीढ़ी बीतला पर, ओतय पूजा होइत अछि। मलाह नाव खोलबासँ पहिने अमर बाबाक नाम लैत अछि; नव जाल पहिने गहमरपर छुआओल जाइत अछि।

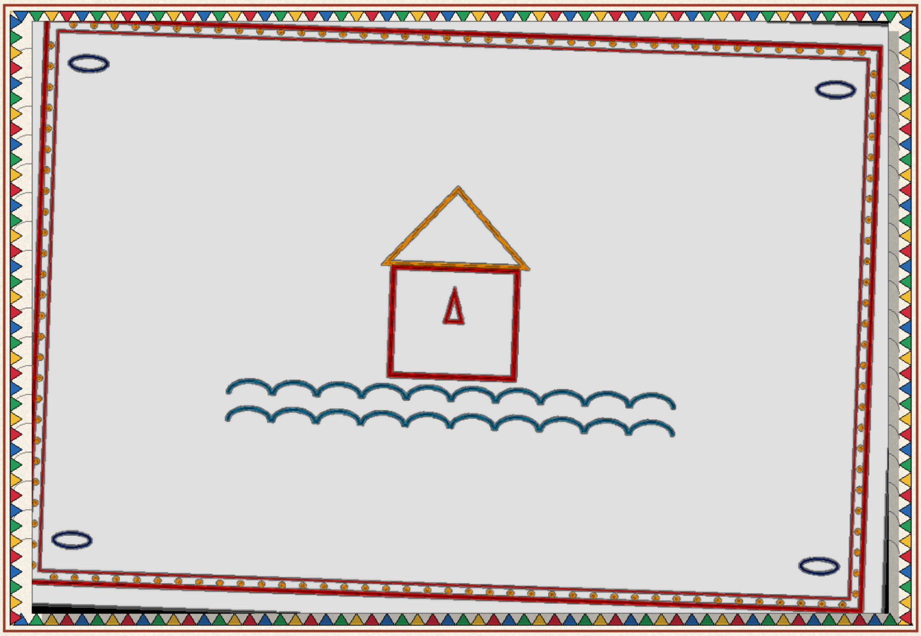

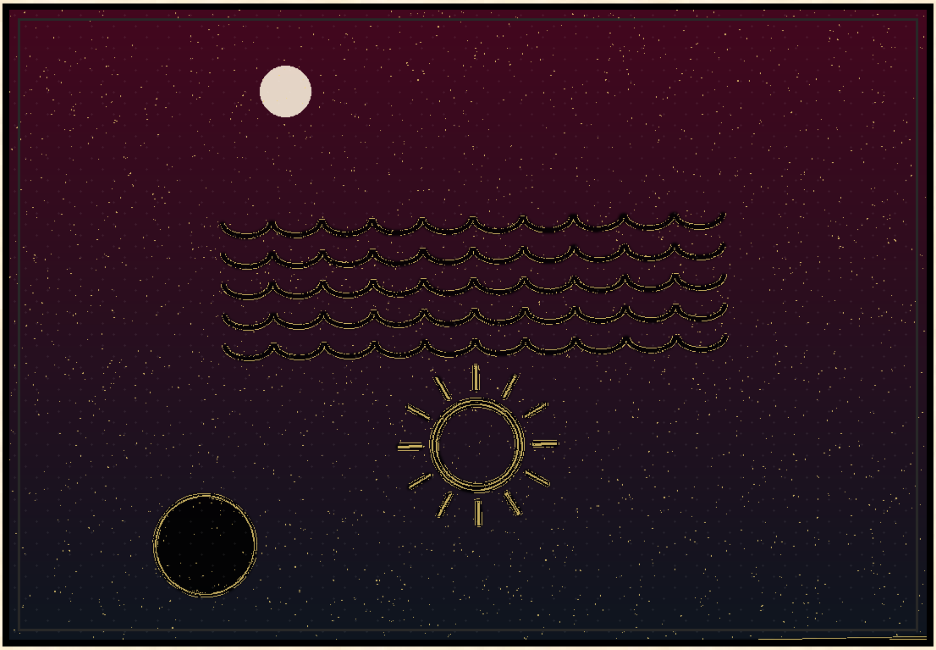

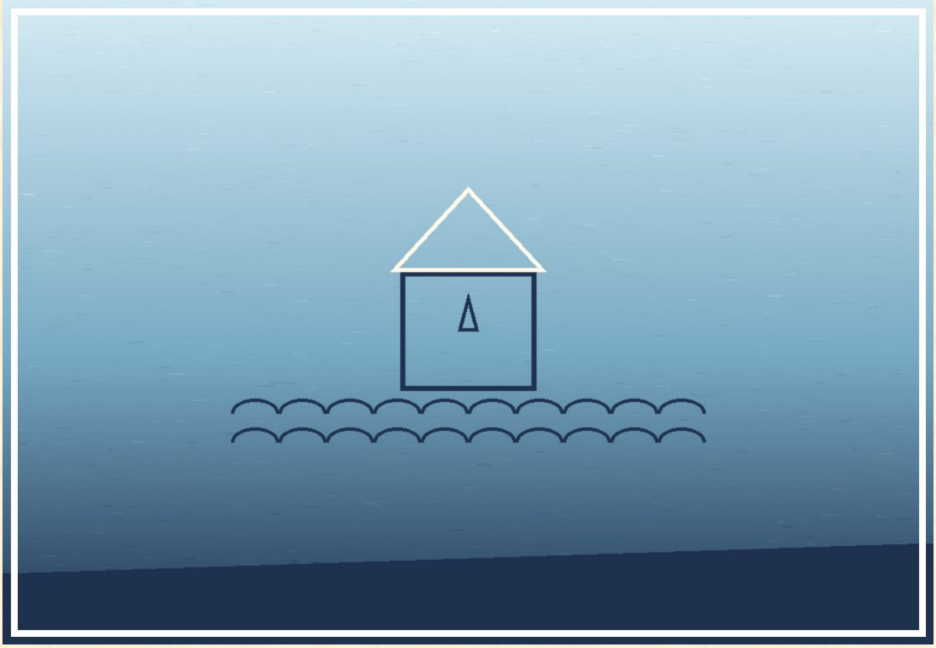

चित्र 24

आ कमला? कमला धारक प्रति लोक आइयो श्रद्धानवत अछि — ओ माए छलीह, माए छथि। बाढ़िमे लोक हुनकासँ क्षमा माँगैत अछि, सुखाड़मे पानि; आ सभ पावनिमे हुनक घाटपर दीप ओहिना जरैत अछि जेना ओहि दिन जरैत छल जहिया बैदलाक डंका नहि बाजल छल।

ई गाथा वीरगाथा थिक — मुदा एकर अन्तिम सीख तरुआरिक नहि, तराजूक थिक। रक्षा धरम थिक; मुदा रक्षाक क्रममे जे निर्दोष रक्त बहैत अछि, से गाथाकेँ सदिखन लेल उदास कऽ जाइत अछि। तेँ अमर बाबाक गहमरपर दीप जरबैत काल बूढ़ मलाह आइयो दूटा प्रार्थना करैत अछि — एक रक्षाक लेल, आ एक क्षमाक लेल।

समाप्त

VIDEHA: विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका: **ISSN 2229-547X:** www.videha.co.in